

हरिभूमि सिरसा-फतेहाबाद भूमि

रोहतक, रविवार, 2 नवंबर 2025

11 मेडिकल स्टोर संचालक की नशे के कारोबार में संलिप्तता पर...



12 59 वर्षों में हरियाणा ने लिखी विकास की नई गाथा: पंजाहार



खबर संक्षेप

मारपीट व धमकी देने वाला आरोपी गिरफ्तार
फतेहाबाद। मारपीट व धमकी देने के मामले में टोहाना पुलिस ने एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। थाना सदर टोहाना प्रभारी उप-निरीक्षक शादीराम ने बताया कि शिकायतकर्ता दलीप कुमार पुत्र रिखपाल पुत्र काशीराम लाम्बा निवासी खेत ढाणी बोस्ती ने शिकायत दर्ज कराई थी कि नामजद आरोपी बजरंग पुत्र रामेश्वर निवासी बोस्ती ने उसे यह कहते हुए मारपीट व गाली-गालीच की कि तुमने पुलिस को मेरे द्वारा खेत में पराली जलाने की सूचना दी है।

माता हरकी देवी कॉलेज में मनाया राष्ट्रीय एकता दिवस

आंठों। माता हरकी देवी महिला महाविद्यालय ओढ़ा में सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में एनएसएस प्रभारी रजनी मेहता के निर्देशन में राष्ट्रीय एकता दिवस का आयोजन किया गया। भारत सरकार द्वारा नियोजित कार्यक्रम में स्वयंसेवी छात्राओं और स्टाफ द्वारा राष्ट्रीय एकता की शपथ ली गई। छात्राओं ने राष्ट्रीय एकता पर आधारित पोस्टर बनाए व अपनी अदभुत प्रतिभा का परिचय दिया। इस अवसर पर मैनेजिंग डायरेक्टर डॉ. कुलदीप कौर आनंद ने छात्राओं के कार्यों की प्रशंसा की।

शहर की समस्याओं को लेकर जताई चिंता

सिरसा। हरियाणा प्रदेश व्यापार मंडल के जिला प्रधान हीरालाल शर्मा ने शहर के वर्तमान के हालातों पर चिंता व्यक्त की। शर्मा ने कहा कि स्टॉर्म वाटर प्रोजेक्ट के कारण आए दिन शहर में हादसे हो रहे हैं। गाड़ियां धंस रही हैं, लेकिन शासन व प्रशासन की ओर से समस्या के प्रति कोई गंभीरता नहीं दिखाई गई। शर्मा ने कहा कि ये तो अभी तक गंभीरता नहीं है कि कोई जानी नुकसान नहीं हुआ है। शासन-प्रशासन भी शायद इसी बात का इंतजार कर रहे हैं कि कोई हादसा हो और जानी नुकसान के बाद ही समस्या पर काम किया जाए।

बाबा सरूप चंद की बरसी पर वार्षिक दीवान आयोजित

ओढ़ा। श्री पीरखाना ओढ़ा में बाबा सरूप चंद गं की बरसी पर वार्षिक दीवान बड़ी श्रद्धा व धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर बाबा सरूप चंद के स्वरूप को स्नान करवाकर नए वस्त्र धारण करवाए गए। इसके बाद पीरखाना के गद्दीनशीन बाबा सोहन लाल गं व बाबा सतीश गं ने बाबा लखदाता पीर व मीरा साहिब के चिराग पेशीशन किए व धूप डालकर पीरबाबा को भोग लगाकर लंगर शुरू करवाया।

30 नवंबर तक चलेगा जागरूकता अभियान

फतेहाबाद। जिला एवं सत्र न्यायाधीश एवं जिला विधिक सेवाएं प्राधिकरण के सचिव दीपक अग्रवाल के मार्गदर्शन में एक नवंबर से 30 नवंबर तक फतेहाबाद जिले में श्रमिक सुरक्षा एवं अधिकार जागरूकता अभियान चलाया जाएगा।

इंटर कॉलेज मीडिया प्रश्नोत्तरी स्पर्धा संपन्न

सिरसा। चौधरी देवीलाल विश्वविद्यालय सिरसा के पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग में इंटर कॉलेज प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का भव्य आयोजन किया गया। यह प्रतियोगिता मीडिया जगत के विभिन्न क्षेत्रों पर आधारित रही, जिनमें पारंपरिक मीडिया, रेडियो, टेलीविजन, विज्ञापन और सोशल मीडिया जैसे विषय शामिल थे। प्रतियोगिता का उद्देश्य छात्रों को मीडिया विषयों की गहराई से अवगत कराना और उनमें रचनात्मक सोच तथा तर्कशक्ति को प्रोत्साहित करना था। प्रश्नोत्तरी के दौरान प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और तीखे सवाल-जवाब के सटीक जवाब दिए।

किसानों और उपायुक्त के बीच बैठक का आयोजन

उपायुक्त ने अधिकारियों को दिए आदेश, तुरंत करें समस्या का हल

नहरी पानी, डीएपी, पराली, मंडी में धान की लूट के मुद्दे रखे

हरिभूमि न्यूज फतेहाबाद

किसान सभा तहसील कमेटी का प्रतिनिधिमंडल शनिवार को डीसी फतेहाबाद से मिला। इस प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व तहसील प्रधान पतराम ढाणी इंशर ने करते हुए कहा कि फतेहाबाद की नहरों में पानी छोड़ने की संबंधित अधिकारियों की मनमर्जी, डीएपी की कालाबाजारी, पराली की गांठ की मशीन ने उपलब्ध न होने और अनाज मंडी में धान की खरीद मनमर्जी से ओने-पोने दामों में किए जाने के मुद्दों पर फतेहाबाद के डीसी से विस्तार से चर्चा हुई है। गांव भूधन कलां के किसान अमरजीत सिंह ढाका ने डीसी को बताया कि टोहाना हेड से फतेहाबाद डिस्ट्रीब्यूटरी नहर में पानी पहले तो 24 अक्टूबर के निर्धारित शेड्यूल की बजाय 27 अक्टूबर को छोड़ा गया और अब फिर वीरवार को पानी घटाकर बिल्कुल कम कर दिया गया है। यह सब सिंचाई विभाग के उच्च अधिकारियों एस ई, एक्स-इन से लेकर एसडीओ तक के द्वारा मिलीभगत करके किया जा रहा है। इस पर डीसी ने एक्सप्लेन से इस बारे में जवाब तलब किया और तुरंत फतेहाबाद नहर में पानी पूरा करने



फतेहाबाद। डीसी से मीटिंग के बाद किसान सभा तहसील फतेहाबाद का प्रतिनिधिमंडल। फोटो : हरिभूमि

टोहाना हेड से फतेहाबाद डिस्ट्रीब्यूटरी नहर में पानी 24 अक्टूबर के निर्धारित शेड्यूल की बजाय 27 को छोड़ा

अनाज मंडी में धान की ढेरियों से अटी पड़ी किसानों को हो रहा भारी नुकसान : ज्याणी

डीएपी की कालाबाजारी, डीलर दे रहे गैर जरूरी सामान

किसान ओमप्रकाश कुलडिया ने कहा कि डीएपी की कालाबाजारी फतेहाबाद के डीलरों के द्वारा बड़े पैमाने पर की जा रही है। डीएपी खाद के साथ किसानों को अन्य गैर जरूरी सामान खरीदने को मजबूर किया जा रहा है और ब्लैक मार्केटिंग करते हुए 300 से 500 प्रति बैग अधिक लिए जा रहे हैं। इसके साथ ही डीसी के समक्ष बात रखी गई कि कोई भी किसान एक एकड़ की पराली भी नहीं जलाना चाहता है परंतु पराली की गांठ बनने की मशीन पर्याप्त संख्या में उपलब्ध नहीं है।

नुकसान नहर के लेट छोड़े जाने पर हुआ है उसके भरपाई 6 नवंबर के बाद अतिरिक्त पानी छोड़कर किया जाएगा।

मनमाने रेटों पर धान खरीद रहे व्यापारी

किसान सभा के तहसील कमेटी के सदस्य कृष्ण ज्याणी ने बताया कि अनाज मंडी में धान की ढेरियों से अटी पड़ी है। व्यापारी बोली करने के लिए एक-दो घंटे आते हैं और उसके बाद बाकी बचे ढेरों की नगमाफिक 200 से 300 रुपए कम रेट में खरीदारी करते हैं। इसे किसानों को भारी नुकसान झेलना पड़ रहा है। डीसी से मीटिंग के बाद तहसील प्रधान पतराम ढाणी इंशर ने बताया कि डीसी ने संबंधित अधिकारियों को नोकरे पर ही उपरोक्त सभी मुद्दों और समस्याओं के तुरंत हल करने के लिए निर्देशित किया। प्रतिनिधिमंडल ने उम्मीद जताई कि संबंधित अधिकारी किसानों को अवश्य राहत देंगे। यदि किसानों को तुरंत राहत नहीं मिल पाती है तो किसानों को संघर्ष का रास्ता चुनना पड़ेगा और किसान सभा के द्वारा संबंधित अधिकारियों के दफ्तर के आगे स्याई धरना लगाया जाएगा। इस प्रतिनिधिमंडल में बख्शीर खैरवाल, रामकुमार वरवारवाल, देवीलाल कुलडिया, सुभाष शर्मा शामिल रहे।

मांगों को लेकर मजदूरों ने किया प्रदर्शन

अनाज मंडी रतिया में मजदूरों की बैठक का होगा आयोजन

हरिभूमि न्यूज रतिया

मार्केट कमेटी में लगातार हरियाणा मजदूर यूनियन के बैनर तले मजदूरों की मांगों को लेकर धरना जारी है। प्रशासन की ओर से मजदूरों की समस्याओं के प्रति अब तक कोई ठोस रुचि नहीं दिखाई गई है, जिससे मजदूरों में भारी नाराजगी है। आज यूनियन प्रतिनिधियों की सचिव से मुलाकात हुई, जिसमें सचिव ने मजदूरों के कार्ड बनाए जाने के लिए



रतिया। मांगों को लेकर धरना देते अनाज मंडी मजदूर। फोटो : हरिभूमि

एक फॉर्म जारी किया। इस फॉर्म के माध्यम से अब सभी मजदूर अपने पहचान कार्ड बनवा सकेंगे। इसके साथ ही यह निर्णय लिया गया कि अनाज मंडी रतिया में मजदूरों की एक बैठक आयोजित की जाएगी,

जिसमें आगे की रणनीति और आंदोलन के आगामी चरणों पर चर्चा की जाएगी। शेष मांगों को लेकर मजदूरों का धरना जारी रहेगा। इस अवसर पर हरियाणा मजदूर यूनियन के अध्यक्ष राजा, बाबू सिंह,

विनोद, छिन्दा सहित बड़ी संख्या में मजदूर उपस्थित रहे। साथ ही इंकलाबी नौजवान सभा हरियाणा के राज्य अध्यक्ष गुरुप्रीत गोपी ने भी धरनास्थल पर पहुंचकर मजदूरों के संघर्ष को अपना समर्थन दिया।

कर्मचारी नेता निहाल सिंह मताना की जेब कटी, हजारों की राशि चुराई

फतेहाबाद। शहर के हिसार रोड स्थित नए बस स्टैंड पर इन दिनों जेब कटने की घटनाएं लगातार बढ़ने लगी हैं। बस में भीड़ का फायदा उठाकर बदमाश लोगों की जेबों पर हाथ साफ कर रहे हैं। कर्मचारी नेता एवं रिटायर्ड कर्मचारी संघ के प्रधान निहाल सिंह मताना की जेब से भी अज्ञात चोरों ने हजारों रुपये की राशि चोरी कर ली। इस बारे में जांचकर्ता देते हुए निहाल सिंह मताना ने बताया कि वह किसी काम से हिसार गए हुए थे। हिसार में काम खत्म होने के बाद वह बस में सवार होकर वापस फतेहाबाद लौट रहे थे। जैसे ही वह नए बस स्टैंड पर पहुंचे और अपनी जेब खोजी तो उनके पैसे तले उजनी निकल गई। बस में भीड़ का फायदा उठाकर अज्ञात बदमाश ने उनकी जेब काट ली। जेब में करीब 7 हजार रुपये की नकदी व अन्य कागजात थे। बस स्टैंड पर उन्होंने पहले आपास युवक की कार्फा काफ़ी तलाश की लेकिन जेबकतरे का कुछ पता नहीं चला। बाद में वह एक कर्मचारी से मदद लेकर वापस घर पहुंचे। इस घटना से कर्मचारियों में कार्फा रोष है। कर्मचारियों का कहना है कि बस स्टैंड पर सुरक्षा बढ़ाई जाए और सख्त दिखाने वाले युवकों पर कार्रवाई की जाए ताकि ऐसे अपराधों को रोका जा सके।

बच्चों को यूनिफार्म बांटकर मनाई पुण्यतिथि

हरिभूमि न्यूज सिरसा

हारे का सहारा चैरिटेबल ट्रस्ट के प्रधान मनीष सिंगला की मां स्व. सुशीला देवी की 5वीं पुण्यतिथि हिसार रोड स्थित रॉयल हवेली में मनाई गई। इस दौरान श्रद्धांजलि समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें बड़ी संख्या में लोगों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराकर दिवंगत आत्मा को नमन किया। कार्यक्रम में भाई कन्हैया शिक्षण संस्थान के जरूरतमंद बच्चों को नई स्कूल वर्दी



(यूनिफॉर्म) वितरित की गई, वहीं धार्मिक अनुष्ठान के तहत, सैंकड़ों ब्राह्मणों को श्रद्धापूर्वक भोजन कराया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए पूर्व राज्यपाल प्रो. गणेशी

मट्टू चेरपरसन ने सोशल मीडिया पर लिखा पूर्व विधायक ने पार्टी से निकलवाया

भट्टकला। मट्टू पंचायत समिति की चेरपरसन ज्योति लूणा ने सोशल मीडिया पर एक बार फिर पूर्व विधायक दुडाराम को लेकर अपने गुस्से का इजहार किया है। भाजपा छोड़कर कांग्रेस में शामिल हो चुकी ज्योति लूणा ने भाजपा चेरपरसन वेद फूलों की फेसबुक पोस्ट के कमेंट में लिखा कि पूर्व विधायक ने मुझे पार्टी से निकलवा दिया, अबकी बार किसकी बारी है। बता दें कि, चेरपरसन ज्योति लूणा का परिवार पहले विधायक दुडाराम का समर्थक था, मगर विधानसभा चुनाव के दौरान ज्योति लूणा व उनका परिवार दुडाराम का साथ छोड़कर कांग्रेस प्रत्याशी बलवान देवलपुरिया के समर्थन में चला गया था। उसके बाद से दुडाराम और चेरपरसन के बीच दूरियां बनी हुई हैं। दरअसल, 30 अक्टूबर की रात को सौभम नायब सेनी हरियाणा सरकार में हरकोफेड के चेरपरसन वेद फूलों के आवास पर डिब्ब करने गए थे। इसके बाद वेद फूलों ने अपने फेसबुक पेज पर कार्यक्रम से जुड़ी तस्वीरें शेयर की। इन पर कमेंट करते हुए चेरपरसन ज्योति लूणा ने लिखा कि वेद फूलों जी आप आगे बढ़ो, हम आपके साथ हैं। यह नारा मने भी लगाया था।



सिरसा। अवैध पिस्तौल व कारतूस सहित पकड़ा गया आरोपी।

धर्म-कर्म श्री राम के जीवन की लीला के बारे में विस्तार से बताया

रघुनाथ मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा के तहत मूर्ति पूजन कार्यक्रम का शुभारंभ

हरिभूमि न्यूज फतेहाबाद।

रघुनाथ मंदिर में शनिवार को मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा व श्री रामचरितमानस पाठ समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पूरी विधि विधान से मंत्र उच्चारण के साथ बनारस से आए आचार्य पंडित दया शंकर पांडे की टीम द्वारा पूजा अर्चना की गई। कार्यक्रम की शुरुआत में सुभाष चुप और शाम आनंद के परिवार ने भगवान श्री राम, सीता, लक्ष्मण, हनुमान और शिव परिवार की स्तुति करते हुए जलाभिषेक किया। तीसरे दिन



रतिया। कार्यक्रम में उपस्थित श्रद्धालुगण। फोटो : हरिभूमि

कथावाचक पंडित पुरुषोत्तम शास्त्री ने भगवान श्री राम के जीवन की लीला के बारे में विस्तार से बताया। राम जन्म के उत्सव पर कार्यक्रम स्थल पर लड्डू बांटकर भगवान श्री राम की जन्म की खुशियां मनाई गईं।

नशा जागरूकता अभियान : महिला कॉलेज में लघु नाटिका की प्रस्तुति

नशा का व्यक्ति, परिवार और समाज पर दुष्प्रभावों के बारे में बताया

हरिभूमि न्यूज रतिया

शहीद दविन्द्र सिंह राजकीय स्नातकोत्तर महिला महाविद्यालय, रतिया में नशा जागरूकता अभियान के अंतर्गत महाविद्यालय के सांस्कृतिक विभाग और नशा जागरूकता प्रकोष्ठ के संयोजन में लघु नाटिका का मंचन किया गया। इस नाटिका का उद्देश्य विद्यार्थियों और समाज में बढ़ती नशे की प्रवृत्ति के प्रति जागरूकता फैलाना था। नाटिका के माध्यम से यह संदेश दिया गया कि नशा व्यक्ति, परिवार



रतिया। महिला कॉलेज में लघु नाटिका प्रस्तुत करती छात्राएं।

और समाज तीनों के लिए विनाशकारी है। विद्यार्थियों ने अपने सशक्त अभिनय के माध्यम से नशे के दुष्परिणामों को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया, जिसे उपस्थित छात्राओं ने सराहा। कार्यक्रम की अध्यक्षता

महाविद्यालय के प्राचार्य परमजीत संधा ने की। उन्होंने कहा कि कहा कि नशा व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक और सामाजिक जीवन को नष्ट कर देता है। युवाओं को इससे दूर रहकर अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर होना चाहिए।

स्मॉल कैप फंड्स ने 26 फीसदी तक दिया रिटर्न भर दी निवेशकों की झोली

स्मॉल कैप म्यूचुअल फंड्स हमेशा से हाई रिटर्न के लिए जाने जाते रहे हैं। हालांकि इनके रिटर्न पर बाजार से जुड़े उतार-चढ़ाव का असर भी पड़ता है, लेकिन आंकड़े बताते हैं कि लंबी अवधि में पॉजिटिव रिटर्न मिलने की गुंजाइश काफी अधिक रहती है। एसोसिएशन ऑफ म्यूचुअल फंड्स इन इंडिया (एएमएफआई) की वेबसाइट पर जिन 13 स्मॉल कैप फंड्स के पिछले 10 साल के आंकड़े मौजूद हैं, उनमें से किसी के भी डायरेक्ट प्लान का सालाना रिटर्न (सीएजीआर) 14% से कम नहीं है। यही नहीं, इनमें से टॉप 5 स्मॉल कैप फंड्स ने लॉन्गम निवेश पर पिछले 10 साल में 19 से 21% फीसदी तक एनुअल रिटर्न दिया है।

एसआईपी पर भी ऊंचा रिटर्न
टॉप 5 स्मॉल कैप फंड्स ने पिछले 10 साल में लॉन्गम के साथ ही साथ रिस्ट्रिक्टेड इनवेस्टमेंट प्लान (एसआईपी) के जरिये निवेश करने वालों को भी 19% से लेकर 26% तक एनुअलाइज्ड रिटर्न दिए हैं। इस शानदार रिटर्न की बदौलत इन फंड्स ने 1 लाख रुपये के एकमुश्त निवेश को 10 साल में 7 लाख रुपये तक बना दिया है, जबकि 10 हजार रुपये की एसआईपी से 10 साल में 47.5 लाख रुपये तक का फंड जमा हुआ है।

ये टॉप 5 स्कीम
टॉप 5 स्मॉल कैप फंड्स की लिस्ट में एचडीएफसी म्यूचुअल फंड, एसबीआई म्यूचुअल फंड, निपॉन इंडिया म्यूचुअल फंड, एक्सिस म्यूचुअल फंड और क्वांट म्यूचुअल फंड जैसे दिग्गज फंड हाउस की स्कीम शामिल हैं।

लॉन्ग टर्म इनवेस्टमेंट क्यों है बेहतर
इक्विटी म्यूचुअल फंड्स के पिछले आंकड़ों के तमाम विश्लेषण यही बताते हैं कि इनमें लंबी अवधि के लिए निवेश करना बेहतर रहता है। हालांकि ही में आई ऐसी ही एक रिपोर्ट के मुताबिक निप्टी स्मॉल कैप 250 इंडेक्स का 10 साल की एसआईपी का मंथली रोलिंग रिटर्न (एक्सआरआरआर) 99% समय पॉजिटिव रहा है। यानी अगर इक्विटी में निवेश करना हो, तो लॉन्ग टर्म एसआईपी उसका बेहतर तरीका है।

एसबीआई, एचडीएफसी समेत कई फंड्स का बेहतरीन प्रदर्शन	5 स्मॉल कैप फंड्स ने 7 गुना तक कर दी लॉन्गम की रकम	10 साल में एसआईपी पर 19 से 26 फीसदी तक रिटर्न दिया	1 लाख के लॉन्गम से 7 लाख तक का फंड तैयार हुआ	इक्विटी में निवेश करना हो, तो लॉन्ग टर्म एसआईपी बेहतर तरीका
---	---	---	---	--

10 साल में बेस्ट रिटर्न देने वाले टॉप फंड

निपॉन इंडिया स्मॉल कैप फंड - डायरेक्ट प्लान	क्वांट स्मॉल कैप फंड - डायरेक्ट प्लान	एक्सिस स्मॉल कैप फंड - डायरेक्ट प्लान	एसबीआई स्मॉल कैप फंड-डायरेक्ट प्लान
● लॉन्गम इनवेस्टमेंट पर 10 साल का रिटर्न (सीएजीआर) : 21.51 %	● लॉन्गम इनवेस्टमेंट पर 10 साल का रिटर्न (सीएजीआर) : 20.42 %	● लॉन्गम इनवेस्टमेंट पर 10 साल का रिटर्न (सीएजीआर) : 19.91 %	● लॉन्गम इनवेस्टमेंट पर 10 साल का रिटर्न (सीएजीआर) : 19.44 %
● 1 लाख के लॉन्गम की 10 साल में फंड वैल्यू : 7,01,649 रुपये	● 1 लाख के लॉन्गम की 10 साल में फंड वैल्यू : 6,41,189 रुपये	● 1 लाख के लॉन्गम की 10 साल में फंड वैल्यू : 6,14,545 रुपये	● 1 लाख के लॉन्गम की 10 साल में फंड वैल्यू : 5,90,878 रुपये
● एसआईपी पर 10 साल का एनुअलाइज्ड रिटर्न : 23.96 %	● एसआईपी पर 10 साल का एनुअलाइज्ड रिटर्न : 25.99 %	● एसआईपी पर 10 साल का एनुअलाइज्ड रिटर्न : 22.43 %	● एसआईपी पर 10 साल का एनुअलाइज्ड रिटर्न : 20.13%
● 10 हजार मंथली एसआईपी की 10 साल में फंड वैल्यू : 42,63,065 रुपये	● 10 हजार मंथली एसआईपी की 10 साल में फंड वैल्यू : 47,56,696 रुपये	● 10 हजार मंथली एसआईपी की 10 साल में फंड वैल्यू : 37,17,373 रुपये	● 10 हजार मंथली एसआईपी की 10 साल में फंड वैल्यू : 34,65,264 रुपये
● एक्सपेंस रेशियो : 0.64 %	● एक्सपेंस रेशियो : 0.71 %	● एक्सपेंस रेशियो : 0.68%	● एक्सपेंस रेशियो : 0.76%



हाई रिटर्न, हाई रिस्क इनवेस्टमेंट
ऊपर दी गई सभी स्कीम समेत तमाम स्मॉल कैप फंड्स को रिस्कमीटर पर बहुत अधिक रिस्क की रेटिंग दी जाती है। अलग-अलग मार्केट केप पर आधारित म्यूचुअल फंड्स में भी स्मॉल कैप को मिड कैप और लार्ज कैप की तुलना में ज्यादा रिस्क माना जाता है। यानी स्मॉल कैप फंड हाई रिटर्न, हाई रिस्क इनवेस्टमेंट की कैटेगरी में आते हैं। इसके अलावा म्यूचुअल फंड्स में पिछले रिटर्न के आगे भी जारी रहने की कोई गारंटी नहीं होती। इसलिए इनमें निवेश के बारे में कोई फेरफाल करने से पहले अपनी रिस्क लेने की क्षमता को ध्यान में रखना चाहिए।

क्या है स्मॉल कैप फंड्स
स्मॉल कैप फंड्स एक प्रकार का म्यूचुअल फंड है जो छोटी कंपनियों के शेयरों में निवेश करता है। इन कंपनियों की मार्केट कैपिटलाइजेशन कम होती है, लेकिन इनमें उच्च विकास क्षमता होती है। स्मॉल कैप फंड्स की विशेषताएं

- उच्च विकास क्षमता: स्मॉल कैप कंपनियों में उच्च विकास क्षमता होती है, जिससे इनके शेयरों की कीमतें बढ़ सकती हैं।
- जोखिम: स्मॉल कैप फंड्स में जोखिम अधिक होता है, क्योंकि छोटी कंपनियों की वित्तीय स्थिति अस्थिर हो सकती है।
- विविधीकरण: स्मॉल कैप फंड्स में निवेश करने से आपके पोर्टफोलियो में विविधीकरण होता है।
- लंबी अवधि के लिए निवेश: स्मॉल कैप फंड्स में निवेश लंबी अवधि के लिए करना चाहिए, ताकि आप बाजार की अस्थिरता को सहन कर सकें।

स्मॉल कैप फंड्स के लाभ

- उच्च रिटर्न: स्मॉल कैप फंड्स उच्च रिटर्न प्रदान कर सकते हैं।
- विविधीकरण: निवेश करने से आपके पोर्टफोलियो में विविधीकरण होता है।
- नई कंपनियों में निवेश: आपको नई व तेजी से बढ़ती कंपनियों में निवेश का अवसर मिलता है।

निवेश की ऐसे प्लानिंग करेंगे तो भविष्य में कभी नहीं होगी पैसों की टेंशन

उम्र का हर दशक अपनी अलग-अलग जिम्मेदारियां और मौके लेकर आता है

20 साल की उम्र रिस्क लेने का समय होता है, काम करने की क्षमता अधिक होती

30 साल की उम्र में बैलेंस और 40 साल की उम्र में ग्रोथ पर फोकस जरूरी होता है

अगर आप भी निवेश कर रहे हैं या अपनी निवेश यात्रा करना चाहते हैं तो अपने लक्ष्य, परिवार, इनकम और बच्चों की स्थिति को देखकर ही निवेश यात्रा शुरू करें। बेहतर प्लानिंग के साथ निवेश करने तो भविष्य में आसानी होगी और आर्थिक रूप से संपन्न रहेंगे। कहते हैं उम्र का हर दशक अपनी अलग-अलग जिम्मेदारियां और मौके लेकर आता है। 20 साल की उम्र में जहां रिस्क लेने का समय होता है, काम

करने की क्षमता अधिक होती है, वहीं 30 साल की उम्र में बैलेंस और 40 साल की उम्र में ग्रोथ पर फोकस जरूरी होता है। अगर आप उम्र के हिसाब से सही फाइनेंशियल प्लानिंग करते हैं, तो न सिर्फ रिटायरमेंट के लिए मजबूत फंड बना सकते हैं, बल्कि जिंदगी भर पैसों की चिंता से भी दूर रह सकते हैं। आज के वक्त में फाइनेंशियल सिक्योरिटी सिर्फ जरूरत नहीं, बल्कि एक आदत बननी चाहिए। ताकि आर्थिक रूप से परेशान न हों और भविष्य हर तरह से बढ़िया रहे। हम सब मेहनत तो करते हैं, लेकिन कमाई का सही इस्तेमाल तभी होता है जब उसके पीछे एक सटीक फाइनेंशियल प्लान हो। रिटायर से लोग कहते हैं कि पैसे बचाने की शुरुआत बाद में करेंगे, लेकिन सच्चाई यह है कि जितनी जल्दी प्लानिंग शुरू करेंगे, उतना मजबूत होगा आपका प्युवर हर दशक अपने साथ नई जिम्मेदारियां और अवसर लेकर आता है। 20 साल की उम्र में में जहां रिस्क लेने का समय होता है, वहीं 30 साल की उम्र में जिम्मेदारियों और इन्वेस्टमेंट में बैलेंस बनाना जरूरी होता है। 40 साल की उम्र में आते-आते सेपेटी और ग्रोथ पर फोकस करना समझदारी बन जाती है। अगर आप उम्र के हिसाब से फाइनेंशियल फेसल्टी लेते हैं, तो न सिर्फ एक मजबूत रिटायरमेंट फंड बना सकते हैं, बल्कि जिंदगी भर पैसों की चिंता से आजादी भी पा सकते हैं।

उम्र के हिसाब से करें प्लानिंग, 20 में रिस्क 30 में बैलेंस और 40 साल में ग्रोथ जरूरी

बजट बनाना सीखें
अपनी कमाई और खर्च का हिसाब रखें। 80/20 का नियम अपनाएं यानी 80% खर्च और 20% बचत या निवेश। इससे आपको अपने पैसों का प्लो समझ आएगा और आप बेवजह खर्चों को कंट्रोल कर पाएंगे।

इमरजेंसी फंड बनाएं
हर महीने के खर्च का 3 से 6 महीने तक का फंड अलग रखें। जैसे अगर आपका खर्च 25,000 रुपये महीना है, तो कम से कम 75,000-1,50,000 रुपये का इमरजेंसी फंड जरूरत होना चाहिए, ताकि किसी भी परेशानी के समय यह काम आ सके और आपको किसी के मुँह की ओर न देखना पड़े।

इंश्योरेंस लेना न भूलें
कम उम्र में प्रीमियम सस्ता होता है। हेल्थ और टर्म इंश्योरेंस दोनों लें, ताकि मेडिकल और लाइफ रिस्क से सुरक्षा बनी रहे। कोई भी परेशानी आने पर परिवार पर अतिरिक्त दबाव न पड़े।

जल्दी निवेश शुरू करें
कम्पाउंडिंग की ताकत का फायदा तभी मिलता है जब शुरुआत जल्दी की जाए। आपका रिटर्न और पॉपीएफ जैसी स्कीम में निवेश कर सकते हैं। इसमें निवेश सुरक्षित है और महंगाई को मात देना या रिटर्न भी मिलता है।

जानकारी बिगनेस डेस्क

30 साल की उम्र जिम्मेदारियों व निवेश में बैलेंस का समय
इस दशक में शादी, बच्चों की पढ़ाई और घर की प्लानिंग जैसी जिम्मेदारियां बढ़ जाती हैं। ऐसे में बैलेंस बनाना जरूरी हो जाता है। फाइनेंशियल गोल्स अपडेट करें बच्चों की पढ़ाई, घर खरीदने या रिटायरमेंट जैसे लक्ष्यों को री-इवैल्यूएट करें। हर 2 साल में अपने पोर्टफोलियो की समीक्षा करें। एसआईपी बढ़ाते रहें सैलरी बढ़ने के साथ हर साल अपनी एसआईपीमें 10-15% इजाफा करें। कोशिश करें कि इनकम का 30-40% निवेश में लगाएं। एसेट एलोकेशन पर ध्यान दें 40% इक्विटी, 40% डेट और 20% गोल्ड या पीपीएफ जैसे सुरक्षित निवेश रखें। इससे रिस्क और रिटर्न में सही संतुलन बना रहेगा। एनपीएस में निवेश करें नेशनल पेंशन सिस्टम (एनपीएस) टैक्स छूट देता है और रिटायरमेंट के लिए मजबूत फंड तैयार करता है।

कर्ज चुकाने की योजना बनाएं
अगर कोई लोन है, खासकर हाई इंटररेस्ट वाला, तो उसे पहले खत्म करें। ईएमआई के बोझ को घटाना फाइनेंशियल फ्रीडम की दिशा में बड़ा कदम है। 40 साल की उम्र: ग्रोथ और सुरक्षा पर फोकस करने का दशक अब आपकी कमाई घटने पर होती है, लेकिन रिटायरमेंट की ज्यादा दूर नहीं होता। इसलिए रिस्क घटाकर ग्रोथ और सुरक्षा पर फोकस करें। रिटायरमेंट फंड का आकलन करें महंगाई को ध्यान में रखते हुए अपने सालाना खर्च का 50 गुना फंड बनाना लक्ष्य रखें। उदाहरण के लिए, अगर आपका मासिक खर्च 50,000 रुपये है, तो रिटायरमेंट कोर्स करीब 3 करोड़ रुपये होना चाहिए। रिस्क कम करें, सुरक्षा बढ़ाएं धीरे-धीरे इक्विटी से पैसा निकालकर डेट फंड्स, बॉन्ड्स या फिक्स्ड इनकम ऑप्शंस में डालें। इंश्योरेंस कवरेज जांचें सुनिश्चित करें कि हेल्थ और टर्म इंश्योरेंस आज की जरूरतों के हिसाब से पर्याप्त हैं। कर्ज मुक्त होने का लक्ष्य रखें रिटायरमेंट से पहले घर या कार जैसे बड़े लोन पूरी तरह चुका दें। इससे आपकी भविष्य की इनकम पर बोझ नहीं पड़ेगा।

अधूरे दस्तावेज या अधूरी जानकारी के साथ निवेश की शुरुआत नहीं हो सकेगी

म्यूचुअल फंड निवेश प्रक्रिया में हो रहे हैं अहम बदलाव, निवेशकों पर क्या होगा असर

अभी तक कई मामलों में अकाउंट केवाईसी प्रक्रिया पूरी होने से पहले ही खुल जाता था

एक बार फिर म्यूचुअल फंड प्रक्रिया में बदलाव हो रहे हैं। इसका निवेशकों पर भी असर पड़ना स्वाभाविक है। इसके कुछ फायदे होंगे तो कुछ नुकसान भी निवेशकों को भुगतने पड़ सकते हैं। इसलिए जरूरी है कि आप भी निवेशक हैं या निवेश यात्रा शुरू करने जा रहे हैं तो आप अलर्ट हो जाएं और सभी दस्तावेजों को जांचके के बाद ही निवेश यात्रा शुरू करें। बताया जा रहा है कि मार्केट रेगुलेटर सेबी द्वारा एक बार फिर म्यूचुअल फंड के नियमों में रिफॉर्म का प्रपोजल लाया गया है। सेबी ने निवेशकों और एसेट मैनेजमेंट कंपनियों (एएमसी) को हो रही दिक्कतों को कम करने के लिए नए म्यूचुअल फंड फॉलियो में पहली बार किए जाने वाले निवेश (पहला ट्रांजेक्शन) की प्रक्रिया को एक जैसा (स्टैंडर्ड) बनाने का प्रस्ताव दिया है। सेबी ने प्रस्ताव रखा है कि अब म्यूचुअल फंड अकाउंट केवल तब ही खोले जा सकेंगे जब निवेशक की केवाईसी प्रक्रिया पूरी तरह से सत्यापित हो जाएगी। हालांकि सेबी की तरफ से की जा रही इस कार्यवाही से निवेशकों को लाभ ही होगा और वे किसी भी तरह के फर्जीवाड़े से बच सकेंगे।

अब से पहले, म्यूचुअल फंड्स के निवेशकों को अपने निवेश के रिस्क पैरामीटर्स की जानकारी महीने के अंत में मिलती थी, यह जानकारी हर महीने के 15 दिन के भीतर उपलब्ध होगी।

सेबी म्यूचुअल फंड के नियमों में रिफॉर्म का प्रपोजल लाया, सभी दस्तावेज देने होंगे

असल में मार्केट रेगुलेटर सेबी द्वारा समय समय पर म्यूचुअल फंड के नियमों में कुछ न कुछ बदलाव किया जाता है, ताकि निवेशकों का हित बना रहे, साथ ही एसेट मैनेजमेंट कंपनियों को भी आसानी हो। वैसे तो कुछ सालों में म्यूचुअल फंड इंडस्ट्री का लोकप्रियता निवेशकों के बीच बहुत ज्यादा बढ़ी है। इंडस्ट्री का कुल एयूएम 75 लाख करोड़ रुपये से ज्यादा हो गया है। ऐसे में सेबी समय समय पर यह ध्यान रखती है कि नियमों में कुछ बदलाव किया जाए या रिफॉर्म किया जाए। वैसे तो कुछ महीनों में सेबी ने कुछ बदलाव या रिफॉर्म किए हैं और आगे के लिए भी कुछ प्रपोजल हैं। ये निवेशकों को म्यूचुअल फंड में निवेश के दौरान बड़ी राहत देने का काम करेंगे। आप भी निवेश करने जा रहे हैं अपने दस्तावेजों को साथ रख लें।

नए प्रपोजल के क्या हैं मायने
अब अधूरे दस्तावेज या अधूरी जानकारी के साथ निवेश की शुरुआत नहीं की जा सकेगी। अमी की बात करें तो कई मामलों में निवेशक का अकाउंट केवाईसी प्रक्रिया पूरी होने से पहले ही खुल जाता है, जिससे आगे चलकर उन्हें ट्रांजेक्शन, रिडेम्पशन और डिविडेंड पाने में परेशानी होती है। इसी को रोकने के लिए सेबी यह नया सिस्टम लागू करने का रहा है। नया सिस्टम लागू होने के बाद पूरी पारदर्शिता के साथ लोग निवेश कर पाएंगे और अपने निवेश को सुरक्षित भी रख सकेंगे। जब एमएसी (एसेट मैनेजमेंट कंपनी) को अकाउंट खोलने और केवाईसी प्रक्रिया पूरी हो जाए, तभी नया फॉलियो बनाया जाएगा। केवाईसी पूरी होने के बाद, एमएसी कंपनी इन दस्तावेजों को केवाईसी रजिस्ट्रेशन एजेंसी (केआर) को भेजेगी, जो केवाईसी की अंतिम जांच करेगी।

डिस्क्लोजर नियमों में बदलाव
एफएफआई और सेबी ने छोटे निवेशकों की सुरक्षा के लिए डिस्क्लोजर नियमों में बदलाव किया है। निवेशकों को अपने निवेश के लिए अधिक स्पष्ट और विस्तृत जानकारी प्राप्त करने का अधिकार होगा। यह नियम निवेशकों को उनके निवेश के लिए सही और समय पर जानकारी प्राप्त करने में मदद करेगा।

कट-ऑफ टाइम में बदलाव
इस साल सेबी ने ओवरनाइट म्यूचुअल फंड स्कीम के लिए कट-ऑफ टाइम में बदलाव किया है। 1 जून 2025 से ऑफलाइन लेनदेन का समय दोपहर 3 बजे तक हो गया है। ऑनलाइन लेनदेन का समय शाम 7 बजे तक है। इन समयों के बाद किए गए लेनदेन अगले कारोबारी दिन प्रोसेस होंगे, जिससे एनएवी (नेट एसेट वैल्यू) बदल सकती है। बदलाव प्लॉजिंग (गिरवी रखने) की प्रक्रिया को आसान बनाने के लिए किया गया है।

एनएफओ को लेकर क्या बदलाव
एसेट मैनेजमेंट कंपनियों को न्यू फंड ऑफर (एनएफओ) से जुड़ाए गए पैसों को तय समय में निवेश करना होगा। अगर वे ऐसा नहीं करते, तो निवेशक बिना एग्जिट लोड दिए अपना पैसा निकाल सकते हैं। यह नियम एमएसी को जरूरत से ज्यादा पैसा जुटाने से रोकेंगे और सही जगह निवेश सुनिश्चित करेगा। इसके लिए 30 दिन का समय निर्धारित है।

स्ट्रेस टेस्ट के नतीजे बताने होंगे
म्यूचुअल फंड स्कीम को स्ट्रेस टेस्ट के नतीजे बताने होंगे, ताकि निवेशकों को स्कीम की वित्तीय स्थिति का सही अंदाजा हो सके। एमएसी कर्मचारियों की सैलरी का कुछ हिस्सा म्यूचुअल फंड स्कीम में लगाया जाएगा। कितना पैसा और कितनी स्कीम में निवेश होगा, यह उनकी भूमिका पर निर्भर करेगा। इससे कर्मचारियों और निवेशकों का हित एक जैसा होगा।

खबर संक्षेप

कबीर सत्संग भवन में 31वां अखंड पाठ 3 से
हिसार। सतगुरु प्रकट दिवस के उपलक्ष्य में जगतगुरु आचार्य श्री गरीबदास महाराज की वाणी का 31वां अखंड पाठ 3 नवंबर को 10:15 बजे पाठ प्रकाश के साथ कबीर सत्संग भवन महावीर कॉलोनी गली नं. 35 महात्मा ज्योतिबा फुले मार्ग में होगा। कबीर सत्संग भवन के संस्थापक एवं संचालक संत शिवदास ने बताया कि 4 नवंबर को 10:15 बजे मध्य का भोग व सायंकाल संध्या आरती व सत्संग प्रवचन होगा। 5 नवंबर को 10:15 बजे अखंड पाठ की पूर्णाहुति भोग होगा इसके साथ ही प्रवचन, सत्संग व भंडारा आयोजित किया जाएगा।

किरमारा में अभय सिंह चौटाला की जनसभा आज

हिसार। जिले के गांव में किरमारा में 2 नवंबर को होने वाली इनलो के राष्ट्रीय अध्यक्ष अभय सिंह चौटाला की जनसभा की तैयारियां पूरी कर ली गई है। जनसभा के प्रति कार्यकर्ताओं व ग्रामीणों में भारी उत्साह है। जनसभा के संयोजक एवं इनलो के प्रदेश सचिव दलबीर किरमारा ने बताया कि अभय सिंह चौटाला की जनसभा दो नवंबर को किरमारा गांव में दोपहर 3 बजे होगी। इसके लिए पूरी तैयारियां कर ली गई है। उन्होंने बताया कि पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अभय सिंह चौटाला राष्ट्रीय अध्यक्ष बनने के बाद पहली बार किरमारा गांव में आ रहे हैं। किरमारा गांव ऐतिहासिक व राजनीतिक दृष्टि से प्रदेश की राजनीति में महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

इक ओंकार सतनाम मेडिटेशन कैंप शुरू

हिसार। गुरु नानक जयंती के उपलक्ष्य में सिरसा रोड स्थित ओंशो ध्यान उपवन में दो दिवसीय एक ओंकार सतनाम मेडिटेशन कैंप का शुभारंभ किया गया। इस शिविर में विभिन्न क्षेत्रों से काफी संख्या में साधकों ने हिस्सा लिया। इस शिविर का संचालन करते हुए स्वामी सच्चिदानंद ने गुरु नानक की शिक्षाओं से साक्षात्कार करवाया। इस अवसर पर ओंशो ध्यान उपवन के संचालक स्वामी संजय व मां सांची भी विशेष रूप से उपस्थित रहे। स्वामी संजय ने बताया कि 2 नवंबर को ओंशो ध्यान उपवन में गुरु नानक जयंती धूमधाम से मनाई जाएगी और दोपहर 1 बजे से दोपहर 2.30 बजे तक सात्विक लंगर प्रसाद का वितरण किया जाएगा।

आर्य मट्ट मॉडल स्कूल के खिलाड़ियों ने मारी बाजी

हिसार। हिसार ब्लॉक द्वितीय जूनियर लेवल खेल प्रतियोगिताओं में आर्य मट्ट मॉडल स्कूल आर्य नगर के खिलाड़ी बच्चों ने सराहनीय प्रदर्शन किया। विकास डिफेंस स्कूल में हुई प्रतियोगिताओं में आर्य मट्ट मॉडल स्कूल आर्य नगर की खो-खो टीम के लड़कों ने प्रथम स्थान और लड़कियों ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। स्कूल की कैरम टीम खिलाड़ियों में भी लड़कों ने प्रथम स्थान पर बाजी मारी। इसी प्रकार 400 मीटर की दौड़ प्रतियोगिता में चिराग और शतरंज प्रतियोगिता में देव ने दूसरा स्थान हासिल किया। योगा में अविनि, अंजलि, मानवी का जिले में चयन हुआ।

हरियाणा दिवस पर हकूवि कर्मचारियों को मिला पदोन्नति का तोहफा

हिसार। एग्रीकल्चर युनिवर्सिटी नॉन टीचिंग स्टाफ एसोसिएशन के प्रधान सुनील कुमार ने बताया कि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर कंबोज के नेतृत्व में कर्मचारियों के प्रति लगातार सराहनीय कदम उठाए जा रहे हैं। सुनील कुमार ने बताया कि विश्वविद्यालय में चार क्लर्क संदीप, ज्योति रानी, नवीन दुहन व राहुल कुमार को सहायक व पांच जूनियर स्केल स्टेनोग्राफर मोनिका, हेमंत, संजय, नीतिन व सोनु को सीनियर स्केल स्टेनोग्राफर के पद पर पदोन्नत किया गया है। सुनील कुमार ने विश्वविद्यालय प्रशासन का आभार जताया।

डॉक्टरों की अधिकृत पर्ची के बिना दवाई न दें : एसपी मेडिकल स्टोर संचालक की नशे के कारोबार में संलिप्तता पर होगी कार्रवाई

मेडिकल एसोसिएशन व मेडिकल स्टोर संचालकों की बैठक को किया संबोधित
हरिभूमि न्यूज ▶▶ सिरसा



सिरसा। मेडिकल एसोसिएशन व मेडिकल स्टोर संचालकों की बैठक को संबोधित करते एसपी दीपक सहारण।

पुलिस अधीक्षक दीपक सहारण ने कहा कि पुलिस द्वारा चलाए जा रहे नशे के खिलाफ अभियान में मेडिकल स्टोर संचालक भी पुलिस प्रशासन का सहयोग करें और किसी भी प्रकार की नशीली दवाई बेचने से परहेज करें। एसपी दीपक सहारण शनिवार को मेडिकल एसोसिएशन व मेडिकल स्टोर संचालकों की बैठक को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि सभी थाना व अन्य यूनिट प्रभारियों को निर्देश दिए गए हैं कि अपने-अपने क्षेत्रों में खुफिया तंत्र को मजबूत कर मेडिकल स्टोरों पर प्रतिबंधित नशीली दवाइयों बेचने वालों की खोज खबर लेकर उनके

खिलाफ सख्त कानूनी कार्रवाई करें। पुलिस अधीक्षक दीपक सहारण ने कहा कि यदि किसी मेडिकल स्टोर संचालकों की नशे के व्यापार में संलिप्तता पाई गई तो उनके खिलाफ भी सख्त कार्रवाई की जाएगी। यदि कोई मेडिकल स्टोर संचालक किसी अन्य के रजिस्ट्रेशन पर मेडिकल स्टोर चलाकर पैसे कमाने के चक्कर में डॉक्टरों की अधिकृत पर्ची के बिना दवाइयों बेचता है और पुलिस जांच

नशीली दवाइयों बेच रहे युवकों की जानकारी पुलिस को दे
एसपी ने कहा कि ड्रग इंजेक्शन से मरने वाले व्यक्ति के मोबाइल फोन की जांच करेगी पुलिस और उसके मोबाइल की लोकेशन कॉल डिटेल, मेडिकल स्टोर मालिक कि संलिप्तता पाए जाने पर उसके खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने आमजन से आह्वान किया है कि वे अपने गांव में स्थित मेडिकल स्टोर पर ध्यान रखें कि वे किस प्रकार की दवाइयों बेच रहे हैं और अगर किसी प्रकार की नशीली दवाइयों बेच रहे हैं तो तुरंत प्रभाव से पुलिस को सूचित करें ताकि उनके खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जा सके।

के दौरान मेडिकल स्टोर पर अनियमितताएं पाई जाती हैं तो स्थानीय प्रशासन के सहयोग से उनका रजिस्ट्रेशन कैसिल करवा कर उनके खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाए। उन्होंने कहा कि कुछ काली भेड़ों हैं जो बच्चों के उजबल भविष्य के साथ खिलवाड़ कर रही

तस्करों के खिलाफ निरंतर कार्रवाई जारी

एसपी ने कहा कि जहां पुलिस की ओर से जहां नशा तस्करों के खिलाफ लगातार ताबड़ तौड़ कार्रवाई की जा रही है, वहीं नशीली प्रतिबंधित दवाइयों बेचने वाले मेडिकल स्टोर संचालकों के खिलाफ भी अब पूरी तरह से एक्शन मोड में आ गई है तथा नशीली दवाइयों बेचने वालों पर शिकंजा कस दिया है। उन्होंने कहा कि नशे के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान में प्रत्येक व्यक्ति की भागीदारी अति आवश्यक है इसलिए मेडिकल स्टोर संचालक भी किसी भी सूरत में नशीली दवाइयों न बेचें तथा जिला पुलिस द्वारा नशे के खिलाफ चलाई जा रही मुहिम में पूर्ण सहयोग करें

हैं, बच्चों के भविष्य के साथ खिलवाड़ करने वाले किसी भी व्यक्ति को नहीं बख्शा जाएगा। सिरसा जिला व प्रदेश से नशे को जड़ मूल से समाप्त करना ही हमारी पहली प्राथमिकता रहेगी।

जिले में चलाया ऑपरेशन जीवन ज्योति नशे के इंजेक्शन और प्रतिबंधित दवाइयों नहीं बेचने का लिया संकल्प



फतेहाबाद। शहर के दवा विक्रेताओं को प्रतिबंधित दवाएं न बेचने का संकल्प दिलाते पुलिस अधिकारी।

हरिभूमि न्यूज ▶▶ फतेहाबाद

पुलिस अधीक्षक सिद्धांत जैन के नेतृत्व में जिलेभर में चलाए जा रहे ऑपरेशन जीवन ज्योति के तहत कैमिस्ट एवं दवा विक्रेताओं को भी इसमें सहयोगी बनाया गया है। सभी मेडिकल स्टोर संचालकों को नशे से संबंधित इंजेक्शन और प्रतिबंधित दवाओं कानून की नहीं, कि विक्री किसी बल्कि समाज की स्थिति में न की आत्मा को करने की शपथ बचाने की लड़ाई दिलाई जा रही है, एसपी ताकि इस घातक जहर का प्रसार पूरी तरह रोका जा सके। एसपी ने कहा कि यह लड़ाई केवल कानून की नहीं, बल्कि समाज की आत्मा को बचाने की लड़ाई है।

दिया आशवासन

टोहाना सदर थाना प्रभारी शादी राम ने शनिवार को कुलां चौकी में मेडिकल स्टोर संचालकों की मीटिंग ली गई। जिसमें थाना प्रभारी द्वारा दवा विक्रेताओं को चेतावनी दी गई कि कोई भी संचालक नशे की दवा नहीं बेचेगा। इस पर सभी मेडिकल संचालकों ने उन्हें आशवासन दिया कि वह कभी भी नशे की कोई दवा नहीं बेचेंगे। शनिवार को कुलां चौकी में आयोजित मेडिकल स्टोर संचालकों की मीटिंग में थाना प्रभारी के साथ कुलां चौकी प्रभारी दलबीर सिंह ने भी दवा विक्रेताओं से नशे के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान में पुलिस का सहयोग करने का आह्वान किया।

डीएसपी ने किया नशामुक्ति केन्द्र का निरीक्षण, नशा पीड़ितों से की मुलाकात

हरिभूमि न्यूज ▶▶ फतेहाबाद



फतेहाबाद। नशामुक्ति केन्द्र में भर्ती युवाओं से बातचीत करते डीएसपी।

डीएसपी मुख्यालय एवं क्राइम कुलवंत सिंह ने शनिवार को फतेहाबाद शहर स्थित नशा मुक्ति केन्द्र का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान डीएसपी कुलवंत सिंह ने नशा पीड़ित व्यक्तियों से बातचीत कर उनका हालचाल जाना तथा उपचार के दौरान आने वाली कठिनाइयों और व्यक्तिगत समस्याओं को समझने के लिए उनसे बातचीत की। उन्होंने नशा पीड़ितों से संवाद कर उन्हें मनोवैज्ञानिक और प्रेरणादायक तरीके से समझाया कि नशे से मुक्ति ही जीवन की वास्तविक जीत है। उन्होंने कहा कि पुलिस केवल

कानून लागू करने वाली संस्था नहीं, बल्कि समाज के सुधार और सहयोग की सशक्त शक्ति है। डीएसपी ने नशा पीड़ितों को अपने परिवार, समाज और राष्ट्र के प्रति जिम्मेदारी निभाने का आह्वान करते हुए उन्हें नए जीवन की शुरुआत करने का संकल्प दिलाया।

भूना में सर्व कर्मचारी संघ की नई कार्यकारिणी गठित, संजय जांडली बने ब्लॉक प्रधान

हरिभूमि न्यूज ▶▶ भूना



भूना। सर्व कर्मचारी संघ की नई कार्यकारिणी गठित टीम और उपस्थित कर्मचारी।

सर्व कर्मचारी संघ ब्लॉक भूना की बैठक शनिवार को विश्राम गृह में आयोजित की गई, जिसमें संगठन के सभी विभागों के कर्मचारी बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। बैठक में सर्वसम्मति से ब्लॉक की नई कार्यकारिणी का गठन किया गया। इस मौके पर जिला फतेहाबाद सर्व कर्मचारी संघ के कोषाध्यक्ष कृष्ण जाखड़ और वीरेंद्र वेनीवाल, भट्ट बतौर पर्यवेक्षक उपस्थित रहे। इसके अलावा रिटायर्ड कर्मचारी संघ जिला सचिव बेगमराज, जिला सलाहकार पृथ्वी सिंह भाना, ब्लॉक उपप्रधान भट्ट हरपाल सिंह ने

भी शिरकत की। वहीं, मनदीप दिल्ली बल्कि हेल्थ विभाग को संगठन सचिव, सत्यवान वर्मा बिजली विभाग को कोषाध्यक्ष और संदीप कुमार सडक एवं भवन निर्माण विभाग को प्रेस सचिव की जिम्मेदारी सौंपी गई।

पिछले सत्र की रिपोर्ट प्रस्तुत की

बैठक की शुरुआत में ब्लॉक कैशियर व सह सचिव ने पिछले सत्र की रिपोर्ट प्रस्तुत की। इसके बाद मौजूदा कार्यकारिणी को मंग कर नई कार्यकारिणी के गठन की प्रक्रिया शुरू की गई। सभी सदस्यों की सहमति से नई कार्यकारिणी का गठन किया गया, जिसमें संजय जांडली सिवाई विभाग को ब्लॉक प्रधान, संदीप नगरपालिका विभाग को उपप्रधान, नरेश नमन सिवाई विभाग को सचिव और ईश्वर सिंह बिजली विभाग को सह सचिव चुना गया।

रत्ताखेड़ा पीएमश्री स्कूल में चार कमरों का किया शिलान्यास

नया भवन छात्रों के लिए बेहतर शिक्षा का माहौल प्रदान करेगा



रतिया। रत्ताखेड़ा स्कूल में कमरों का शिलान्यास करते सरपंच अरविंद सिहाग।

हां रत्ता खेड़ा के पीएम श्री स्कूल में शनिवार को सरपंच अरविंद सिहाग ने 41 लाख की लागत से चार कमरों के निर्माण का शिलान्यास किया। इस अवसर पर स्कूल के प्रिंसिपल महेंद्र, अमित पुनिया, रामनिवास और गांव के कई मौजिज व्यक्ति भी मौजूद रहे। सरपंच अरविंद सिहाग ने कहा कि यह नया भवन छात्रों के लिए बेहतर शिक्षा का माहौल प्रदान करेगा और गांव के विकास में एक महत्वपूर्ण कदम साबित होगा। उन्होंने बताया कि इस परियोजना का उद्देश्य स्कूल में सुविधाओं को

बढ़ाना और छात्रों की संख्या में वृद्धि करना है। स्कूल के प्रिंसिपल महेंद्र ने इस पहल को सराहना करते हुए कहा कि नए कमरों के निर्माण से शिक्षण प्रक्रिया को और अधिक प्रभावी बनाने में मदद मिलेगी। उन्होंने गांववासियों से

पुलिस ने दो युवकों को किया गिरफ्तार शराब ठेके पर काम करने वाले कारिंदे से मारपीट

हरिभूमि न्यूज ▶▶ फतेहाबाद



जिले के शहर टोहाना में चण्डीगढ़ रोड स्थित शराब ठेके पर काम करने वाले कारिंदे से मारपीट करने और धमकी देने के मामले में टोहाना पुलिस ने दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। थाना शहर टोहाना में मामला दर्ज किया गया था। पुलिस ने इस मामले में कार्यवाही करते हुए दोनों नामजद आरोपियों शुभम पुत्र रामदिया नवासी वार्ड नं. 2, बाबा बुटाशाह बस्ती, टोहाना तथा भीम उर्फ तोता पुत्र मीनू निवासी वार्ड नं. 2, बाबा बुटाशाह बस्ती, टोहाना को गिरफ्तार कर थाना हवालात में बन्द किया गया। मामले की जांच जारी है।

जिले के शहर टोहाना में चण्डीगढ़ रोड स्थित शराब ठेके पर काम करने वाले कारिंदे से मारपीट करने और धमकी देने के मामले में टोहाना पुलिस ने दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। थाना शहर टोहाना में मामला दर्ज किया गया था। पुलिस ने इस मामले में कार्यवाही करते हुए दोनों नामजद आरोपियों शुभम पुत्र रामदिया नवासी वार्ड नं. 2, बाबा बुटाशाह बस्ती, टोहाना तथा भीम उर्फ तोता पुत्र मीनू निवासी वार्ड नं. 2, बाबा बुटाशाह बस्ती, टोहाना को गिरफ्तार कर थाना हवालात में बन्द किया गया। मामले की जांच जारी है।

देवउठनी एकादशी पर श्री श्याम मंदिर में उमाड़ा भवतों का सैलाब

हिसार। कार्तिक शुक्ल देवउठनी एकादशी पर श्री श्याम मंदिर सेक्टर 16—17 में बाबा का प्रगटोत्सव मनाया गया। अलसुबह से ही मंदिर में भक्तों के आने का सिलसिला शुरू हो गया। देर रात्रि तक भक्तजन लंबी कतारों में जयकारों का उद्घोष करते हुए श्रद्धा भाव के साथ बाबा के दर्शनों को उतावले देखे। श्री श्याम मंदिर में श्याम प्रगटोत्सव के लिए बाबा का बैंगलोर व कलकता से आए विशेष फूलों से बाबा के दरबार को बंगले का स्वरूप देते हुए अलौकिक श्रृंगार किया गया। मंदिर परिसर की रंग-बिरंगी लाइटिंग एवं बंगाल से आए कारीगरों द्वारा परिसर को फूलों से भव्य रूप सजाया गया। मंदिर में स्थापित सभी दरबारों में विराजमान देवी-देवताओं को पानीपत से आई जरी युक्त विशेष पोशाक पहनाई गई। शाम को भजन संध्या का आयोजन किया गया जिसमें गायक कलाकारों ने बाबा की महिमा का गुणगान किया।

गोवंश की रक्षा ही भगवान कृष्ण के अवतार का प्रमुख उद्देश्य

हमारे शास्त्रों में अवतारों से अधिक गौमाता की महिमा का वर्णन : साध्वी
हरिभूमि न्यूज ▶▶ फतेहाबाद

श्री योग अनुभव मंदिर समिति फतेहाबाद द्वारा प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी विशाल गोपाष्टमी महोत्सव एवं गौ पूजन का कार्यक्रम साध्वी शांत योगानंद के सान्निध्य में श्री हरियाणा गोशाला में बड़े भाव और उत्साह के साथ मनाया गया। साध्वी शांत योगानंद ने भारी संख्या में आये हुए सभी श्रद्धालुओं को गो महिमा पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हमारे शास्त्रों में अवतारों से

उत्साह के साथ मनाया गया गोपाष्टमी महोत्सव एवं गोपूजन का कार्यक्रम

अधिक गोमाता की महिमा का वर्णन है। गौवंश की सेवा एवं रक्षा ही भगवान श्री कृष्ण के अवतार का प्रमुख उद्देश्य रहा है। उन्होंने कहा कि गोमाता की रक्षा और आशीर्वाद से ही धर्म और संस्कृति की रक्षा हो सकती है जो की हम सनातन धर्मावलम्बियों का प्रधान कर्तव्य है। साध्वी शांत योगानंद ने कहा कि हमारे शास्त्रों में केवल दूध देने के कारण ही गाय को पूज्य नहीं कहा



फतेहाबाद। गोपाष्टमी पर श्रद्धालुओं के साथ गौपूजन करते साध्वी शांत योगानंद।

जो कि अत्यंत पवित्र और उपयोगी है। अंत में नित्य गौश्रास का संकल्प दिलाते हुए साध्वी ने कहा कि आज मानव जीवन का हर क्षेत्र प्रतिस्पर्धा और च्यस्तता से भरा है अतः समय-समय पर नजदीकी गोशालाओं में जाकर हमें गौसेवा करनी चाहिए जिससे हम स्वयं और अपनी आने वाली पीढ़ी का भविष्य सुरक्षित कर पायें।

ये रहे मौजद

इस अवसर पर गौमाता का पूजन व महाआरती कर भोग के रूप में पौष्टिक आहार खिलाया गया। इस दौरान मंदिर समिति के नरेश मदान, सुरेश मैहता, देवराज आनंद, रमेश मैहता, सुनील माटिया, गौशाला कमेटी के सुरेश बंसल, गवर्ण लाल, प्रहलाद राय, सुशील सिंगला, आनंद मितल, चंदन चारू उड्डे भारी संख्या में श्रद्धालु मौजूद रहे।

गया बल्कि तैतीस कोटि देवी देवताओं का वास गोमाता में है। गाय के अंग-प्रत्यंग में देवों का वास होने के कारण चलता फिरता मंदिर भी कहा जा सकता है। इससे अधिक गाय की महता और क्या हो सकती है कि उनके गुणों से प्रभावित हो स्वयं लक्ष्मी और गंगा जी भी अनुनय-विनय करने के बाद ही उनके गोबर और मूत्र में स्थान ले पायी अर्थात् उनके गोबर में लक्ष्मी

खबर संक्षेप

बरसीन मार्ग पर फिर से जलभराव, परेशानी

फतेहाबाद। मुख्यमंत्री के दो दिवसीय फतेहाबाद दौरे के दौरान जहां पूरा प्रशासन सबको पर सक्रिय नजर आया, वहीं उनके प्रस्थान के मात्र एक दिन बाद ही शहर की व्यवस्थाएं फिर दर पर लौट आई हैं। फतेहाबाद से बरसीन की ओर जाने वाले मुख्य मार्ग की हालत इसका बड़ा उदाहरण बन गई है। इस मार्ग पर नई निजी कॉलोनिआं विकसित हो रही हैं, जहां लोगों ने लाखों रुपए खर्च कर महंगे प्लॉट खरीदे हैं, लेकिन कॉलोनी के बाहर का दृश्य देख यह विश्वास करना मुश्किल है कि यह शहर का मुख्य मार्ग है।

गुरु ही दिखाता है मुक्ति का मार्ग : साध्वी भारती

सिरसा। दिव्य ज्योति जागृति संस्थान की ओर से महाशक्ति दुर्गा मंदिर खैरपुर में तीन दिवसीय सुंदर कांड कथा का आयोजन किया गया, जिसमें आशुतोष महाराज की शिष्या साध्वी पूजा भारती ने बताया कि सुन्दर कांड प्रसंग में गोस्वामी तुलसीदास ने बताया है कि जब हनुमान जी को व अन्य राम भक्तों को मां सीता की खोज करने की सेवा मिली तो सभी अलग-अलग दिशाओं में चले गए। हनुमान जी को सौ योग्य का समुद्र पार कर मां सीता की खोज करने की सेवा मिली। जब हनुमान जी समुद्र पार करने लगे, तो रास्ते में बहुत सी बाधाएं आयीं। जिन को हनुमान जी ने बहुत ही विवेकपूर्ण ढंग से पार किया। साध्वी जी ने बताया कि यहां हनुमान जी की यात्रा मां सीता रूपी भक्ति को प्राप्त करने की यात्रा है।

किसानों की मदद के लिए आगे आए सरकार

सिरसा। सिरसा की सांसद कुमारी सैलजा ने कहा कि रोहताक, भिवानी, हिसार और फतेहाबाद जिलों में जलभराव के कारण किसानों की फसलें बर्बाद हो चुकी हैं, परंतु राज्य सरकार अब तक न तो गिरदावरी पूरी कर पाई है और न ही किसानों को उचित मुआवजा देने की दिशा में कोई ठोस कदम उठाए हैं। मुआवजा के नाम पर सरकार किसानों को तारीख पर तारीख दे रही है। कुमारी सैलजा ने शनिवार को जारी बयान में कहा है कि हाल ही में प्रकाशित समाचार के अनुसार चार जिलों में 50 हजार एकड़ से अधिक भूमि में अभी भी 2 से 3 फीट तक पानी भरा हुआ है। खेतों में खड़ी फसलें सड़ चुकी हैं और खेती की बुआई पर संकट खड़ा हो गया है। उन्होंने कहा कि फतेहाबाद जिले के बड़ोपल, धांगड़, धानकला, डिंग, जंडवाला जाटान, भूना और आसपास के गांवों पूरी तरह जलमग्न हैं।

एशियन यूथ गेम्स में हर्षित ने जीता कांस्य पदक

सिरसा। बहरीन में आयोजित तीसरी एशियन यूथ गेम्स-2025 में सिरस के हर्षित ने 73 किलो भारवर्ग में कांस्य पदक जीत कर भारत को जूडो का पहला पदक दिलाकर जिले व प्रदेश को गौरवाचित किया है। हर्षित ने जॉर्डन के खिलाड़ी को हराकर भारत के लिए यह पदक हासिल किया और 2026 में होने वाले यूथ ऑलिंपिक के लिये क्वालीफाई कर लिया है। हर्षित ने अपनी सफलता का श्रेय अपनी मां अर्चना जूडो कोच, सिरसा स्टेडियम के जूडो खिलाड़ियों के प्रोत्साहन व एप्सो. के योगदान को बताया।

कैबिनेट मंत्री गंगवा के आवास का घेराव करेंगे सेवानिवृत्त कर्मचारी, चार को बैठक

हरियाणा सरकार द्वारा सेवानिवृत्त कर्मचारियों के साथ किए जा रहे उपेक्षापूर्ण रवये व नीतियों के विरोध में रिटायर्ड कर्मचारियों द्वारा रिटायर्ड कर्मचारी संघ के बैनर तले 26 नवम्बर को हिसार में कैबिनेट मंत्री रणबीर गंगवा के निवास स्थान पर मण्डल कम्बोज करेगे स्तरीय रोष प्रदर्शन किया जाएगा। प्रदर्शन में फतेहाबाद जिले से भी भारी संख्या में सेवानिवृत्त कर्मचारी भाग लेंगे। प्रदर्शन की तैयारियों व अन्य मांगों

हरियाणा दिवस के अवसर पर सांस्कृतिक उत्सव का आयोजन 59 वर्षों में हरियाणा ने लिखी विकास की नई गाथा: पनिहार

कार्यक्रम में पारंपरिक खानपान की झलक भी दिखी, लोक कलाकारों ने दी शानदार प्रस्तुति

हरिभूमि न्यूज़ ►► सिरसा

हरियाणा दिवस के अवसर पर शनिवार को सिरसा के पंचायत भवन में सांस्कृतिक उत्सव कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में हरियाणवी संस्कृति से ओतप्रोत प्रस्तुतियों ने सबका मन मोहा वहीं पारंपरिक खानपान की झलक भी दिखी। कार्यक्रम में नलवा विधानसभा से विधायक रणधीर पनिहार ने बतौर मुख्यातिथि शिरकत की और पारंपरिक खानपान से संबंधित प्रदर्शनी, पेंटिंग व कले मॉडलिंग



सिरसा। हरियाणा दिवस पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते विधायक रणधीर पनिहार तथा सांस्कृतिक उत्सव कार्यक्रम में प्रस्तुति देती छात्राएं।

प्रदर्शनी का अवलोकन कर आगे बढ़ रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के लक्ष्य विकसित भारत में हरियाणा सबसे आगे विकसित हरियाणा प्रदेश बनने के पथ पर अग्रसर है। उन्होंने कहा कि पिछले ग्यारह वर्षों में हरियाणा ने हर क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की है। हमारा संकल्प है कि आने वाले वर्षों में हरियाणा देश के सबसे विकसित राज्यों में शामिल हो। आज हरियाणा शिक्षा, स्वास्थ्य और सड़क ढांचे में देश के अग्रणी राज्यों में से एक है। उन्होंने कहा कि हरियाणा में जमीन-आसमान का अंतर है। कभी पंजाब की स्थिति हरियाणा से बेहतर मानी जाती थी, लेकिन आज हरियाणा हर क्षेत्र में अग्रणी है।

संस्कृतिक उत्सव कार्यक्रम में पारंपरिक देशी खानपान कचरी की सब्जी, बाजरे की रोटी, गुड़ के चावल, बाजरे व मोठ की खिचड़ी, चूरमे के लड्डू, पेड़े, गुलगुले, गुड़ की सुहाली, गोद के लड्डू, राबड़ी, मोटा अनाज से बने पकवान की प्रदर्शनी लगाई गई। इस अवसर पर स्कूली विद्यार्थियों ने हरियाणवी संस्कृति पर आधारित पेंटिंग का प्रदर्शन किया। साथ ही विद्यार्थियों ने कले के माध्यम से अपनी किराटिचिटी को मूर्त रूप दिया व उसकी प्रदर्शनी लगाई। दर्शकों ने बड़ी रुचि से प्रदर्शनी का अवलोकन किया। कार्यक्रम में विभिन्न सांस्कृतिक प्रस्तुतियां पेश की गईं और विजेताओं का चयन किया गया। विजेता प्रतिभागियों को प्रथम पुरस्कार के तौर पर 2100 रुपये, द्वितीय को 1500 रुपये व तृतीय को 1000 रुपये दिए गए।

हरिभूमि न्यूज़ ►► फतेहाबाद

कचरी की सब्जी, बाजरे की रोटी व गुड़ वाले चावल परोसे गए

संस्कृतिक उत्सव कार्यक्रम में पारंपरिक देशी खानपान कचरी की सब्जी, बाजरे की रोटी, गुड़ के चावल, बाजरे व मोठ की खिचड़ी, चूरमे के लड्डू, पेड़े, गुलगुले, गुड़ की सुहाली, गोद के लड्डू, राबड़ी, मोटा अनाज से बने पकवान की प्रदर्शनी लगाई गई। इस अवसर पर स्कूली विद्यार्थियों ने हरियाणवी संस्कृति पर आधारित पेंटिंग का प्रदर्शन किया। साथ ही विद्यार्थियों ने कले के माध्यम से अपनी किराटिचिटी को मूर्त रूप दिया व उसकी प्रदर्शनी लगाई। दर्शकों ने बड़ी रुचि से प्रदर्शनी का अवलोकन किया। कार्यक्रम में विभिन्न सांस्कृतिक प्रस्तुतियां पेश की गईं और विजेताओं का चयन किया गया। विजेता प्रतिभागियों को प्रथम पुरस्कार के तौर पर 2100 रुपये, द्वितीय को 1500 रुपये व तृतीय को 1000 रुपये दिए गए।

हर्षोल्लास से मनाया हरियाणा दिवस व पटेल जयंती

सिरसा। डीएचपी पुलिस पब्लिक स्कूल सिरसा में शनिवार को हरियाणा दिवस एवं सरदार वल्लभभाई पटेल जयंती बड़े उत्साह और हर्षोल्लास से मनाई गई। कार्यक्रम की शुरुआत एकता और देशभक्ति के भावों से हुई। स्कूली विद्यार्थियों ने सरदार वल्लभभाई पटेल के जीवन एवं उन द्वारा देश को दिए गए योगदान पर कविताएं प्रस्तुत कीं। इन प्रस्तुतियों ने सभी के मन में देशभक्ति और एकता की भावना को प्रबल किया। मंच संचालन शिक्षिका ज्योति और रजनी ने ठेठ हरियाणवी शैली में किया, जिससे पूरा माहौल हरियाणवी रंग में रंग गया। जीवंत और उत्साहपूर्ण बने इस माहौल में विद्यार्थियों ने हरियाणा दिवस पर अनेक रंगरंगार सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी।

हरियाणा दिवस पर एसपी ने दी शुभकामनाएं, नशामुक्ति का आह्वान

फतेहाबाद। हरियाणा दिवस के गौरवमय अवसर पर पुलिस अधीक्षक सिद्धन्त जैन ने जिलावासियों को शुभकामनाएं दी हैं। उन्होंने अपने संदेश में कहा कि हरियाणा दिवस हमारे लिए केवल उत्सव का दिन नहीं, बल्कि यह हमारे प्रदेश की गौरवशाली संस्कृति, परंपरा, परिश्रम, वीरता और पारस्परिक सम्बन्ध का प्रतीक है। हरियाणा की पवित्र धरती सदैव प्रफुल्लित, समृद्ध और प्रगति के उज्ज्वल उदहारण प्रस्तुत करती रही है। एसपी जैन ने कहा कि यह अवसर हमें एकजुट होकर अपने प्रदेश की प्रगति में योगदान देने की प्रेरणा देता है। आज के दिन हम सब यह संकल्प लें कि अपने हरियाणों को नशा-मुक्त, अपराध-मुक्त, सुरक्षित, स्वच्छ, शिक्षित एवं समृद्ध बनाने के लिए निरंतर प्रयासरत रहेंगे। समाज में शांति, सौहार्द और कठोर व्यवस्था बनाए रखना हम सभी की सामूहिक जिम्मेदारी है। पुलिस अधीक्षक ने कहा कि जिलावासियों को सतत सचेत रहना, जागरूकता और सहभागिता ही फतेहाबाद को विकास, सुरक्षा और सामाजिक समरसता के पथ पर अग्रसर रखेगा।

कनाडा के संत जगदीश सिंह का फतेहाबाद में नायक समाज ने किया जोरदार स्वागत

हरिभूमि न्यूज़ ►► फतेहाबाद

जिला कष्ट निवारण कमेटी के सदस्य एवं पार्षद जगदीश नायक के निवास स्थान पर कनाडा से पहुंचे संत जगदीश सिंह का नायक समाज के प्रबुद्ध जनों द्वारा ज्वरदार स्वागत किया गया। संत जगदीश सिंह ने समाज के लोगों को राष्ट्रीय स्तर पर मंच के गठन पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि पंजाब, राजस्थान और हरियाणा में समाज के लोग काफी संख्या में हैं और अब विदेशों में भी भारी संख्या में अपनी उपस्थिति दर्ज करावा रहे हैं। जरूरत है इन सभी को एक मंच पर आने की ताकि संगठन



फतेहाबाद। कनाडा के संत जगदीश सिंह का स्वागत करते जगदीश नायक व समाज के लोग।

एकजुट होने का संदेश

इस मौके पर युवा नेता सुरेंद्र पंचर साहरोड़, छात्र नेता मजोज अटवाल, राय सिंह एडवोकेट, मास्टर रमेश अटवाल ने भी विचार रखे और संत जगदीश सिंह के नेतृत्व में समाज को एकजुट करने के लिए मंच उपलब्ध करवाने पर जोर दिया। इस मौके पर युवा नेता टोनी नायक, सुल्तान पंचर, दलबीर आर्य, राजेश नायक, रवि नायक, राजकुमार सरपंच, सुखदेव सिंह, काला सिंह, अजमेर सिंह सहित नायक समाज के अनेक गणमान्य लोग मौजूद रहे।

राघवेन्द्र दास की अगुवाई में द्वितीय सनातन एकता पदयात्रा निकली, गोमाता व हिंदू राष्ट्र के लगे जयकारे

हरिभूमि न्यूज़ ►► फतेहाबाद

बाबा बागेश्वर धाम के प्रमुख पंडित धीरेंद्र शास्त्री के शिष्य राघवेन्द्र दास के नेतृत्व में द्वितीय सनातन एकता पदयात्रा धूमधाम से निकाली गई। यह यात्रा श्री दुर्गा मंदिर से रवाना होकर भीमा बस्ती, जवाहर चौक, थाना रोड, लाल बत्ती चौक होते हुए भट्ट मंडी पहुंची। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मांकट कमेटी के वाइस चेरमैन इंद्र गावड़ी, समाजसेवी राजेश गर्ग,

सरकार से गरीब, मजदूर, किसान और कर्मचारी सहित सभी वर्ग परेशान : कृष्ण

हरिभूमि न्यूज़ ►► सिरसा

बसपा के प्रदेश अध्यक्ष कृष्ण जमालपुर ने कहा कि हरियाणा की बीजेपी सरकार जनता को लूटने में लगी हुई है। उन्होंने कहा कि गरीब, मजदूर, किसान और कर्मचारी सभी वर्ग परेशान हैं, जबकि बेरोजगार युवाओं के पास रोजगार नहीं है। कृष्ण जमालपुर शनिवार को सिरसा में कार्यकर्ताओं की मासिक बैठक को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि सरकार की नीतियां पूरी तरह विफल हैं और किसानों को प्राकृतिक आपदाओं के साथ-साथ सरकारी लापरवाही का भी सामना करना पड़ रहा है। प्रदेश प्रभारी रामसिंह प्रजापति भी मौजूद रहे।



सिरसा। बैठक के दौरान मौजूद बसपा कार्यकर्ता।

सिरसा शहर की हालत खराब : रामधन चौटाला

जिलाध्यक्ष रामधन चौटाला ने कहा कि सिरसा शहर की हालत बेहद खराब है। उन्होंने कहा कि सरकारी तंत्र और प्रशासन की मिलीभगत से पूरा शहर गड़बड़े और टूट्टी सड़कों में तब्दील हो गया है। अटवाचार की लपेट में वाटर सर्वो मंजूर, जिसके कारण सिरसा शहर में रोजाना लोग दुर्घटना के शिकार हो रहे हैं, गरीब मजदूरों, ड्राइवर्स, महिलाओं और बच्चों को रोजाना परेशानी उठानी पड़ रही है। बैठक में दूषण बरोड़, गुरदीप कंबोज, लालू लाम आसाखेड़ा, पुष्पेन्द्र शास्त्री, जसवंत सिंह, राममत्त, नारायण दास आदि मौजूद थे।

सिंह भगत जांडवाला सोत्तर, महंत राजेश गिरी बनगांव व नटवर गिरी जी महाराज खैरातीखेड़ी का सानिध्य प्राप्त हुआ। ब्रह्मलीन शुक्रगिरी, गौलोकवासी राजेंद्र नाथ महाराज, पूंय राजेंद्र दास देवाचार्य महाराज, उत्तर प्रदेश और स्वामी हित प्रेमानंद महाराज, वृंदावन का आशीर्वाद प्राप्त हुआ। आयोजक मनोज नारंग ने बताया कि यह पदयात्रा सनातन धर्म और एकता के संदेश को जन-जन तक पहुंचाने का संकल्प लेकर निकाली गई है। यात्रा भट्टकलां स्थित शिव श्याम मंदिर में पहुंचकर सम्पन्न हुई, जहां ध्वजा चढ़ाई गई।



फतेहाबाद। राघवेन्द्र दास के नेतृत्व में निकाली गई द्वितीय सनातन एकता पदयात्रा।

धीरज मोंगा व भूपेंद्र शर्मा रहे। मंच संचालन राजकुमार मदान ने किया। श्री दुर्गा मंदिर के पुजारी महेंद्र शर्मा ने गौ पूजन व ध्वजा पूजन कराया। करीब 18 किलोमीटर लंबी इस यात्रा में बच्चों, महिलाओं व

सिंह भगत जांडवाला सोत्तर, महंत राजेश गिरी बनगांव व नटवर गिरी जी महाराज खैरातीखेड़ी का सानिध्य प्राप्त हुआ। ब्रह्मलीन शुक्रगिरी, गौलोकवासी राजेंद्र नाथ महाराज, पूंय राजेंद्र दास देवाचार्य महाराज, उत्तर प्रदेश और स्वामी हित प्रेमानंद महाराज, वृंदावन का आशीर्वाद प्राप्त हुआ। आयोजक मनोज नारंग ने बताया कि यह पदयात्रा सनातन धर्म और एकता के संदेश को जन-जन तक पहुंचाने का संकल्प लेकर निकाली गई है। यात्रा भट्टकलां स्थित शिव श्याम मंदिर में पहुंचकर सम्पन्न हुई, जहां ध्वजा चढ़ाई गई।

कैबिनेट मंत्री गंगवा के आवास का घेराव करेंगे सेवानिवृत्त कर्मचारी, चार को बैठक

हरियाणा सरकार द्वारा सेवानिवृत्त कर्मचारियों के साथ किए जा रहे उपेक्षापूर्ण रवये व नीतियों के विरोध में रिटायर्ड कर्मचारियों द्वारा रिटायर्ड कर्मचारी संघ के बैनर तले 26 नवम्बर को हिसार में कैबिनेट मंत्री रणबीर गंगवा के निवास स्थान पर मण्डल कम्बोज करेगे स्तरीय रोष प्रदर्शन किया जाएगा। प्रदर्शन में फतेहाबाद जिले से भी भारी संख्या में सेवानिवृत्त कर्मचारी भाग लेंगे। प्रदर्शन की तैयारियों व अन्य मांगों

धर्म-कर्म प्राचीन श्री श्याम मंदिर में चार दिवसीय कार्तिक महोत्सव

राधाकृष्ण महारास नृत्य की भाव पूर्ण प्रस्तुतियों ने मन मोहा

नृत्य के माध्यम से बाबा की महिमा का गुणगान किया

हरिभूमि न्यूज़ ►► सिरसा

नोहरिया बाजार स्थित प्राचीन श्री श्याम मंदिर में चल रहे चार दिवसीय कार्तिक मेला महोत्सव के तीसरे दिन मंदिर प्रांगण में बाबा के श्रद्धालुओं की गहमा-गहमी रही।



सिरसा। प्राचीन श्याम मंदिर में आयोजित कार्तिक मेला महोत्सव में राधाकृष्ण महारास नृत्य करते कलाकार।

आज दोपहर मध्याह्न आरती के बाद छपन भोग प्रसाद अर्पित किया गया, जो कि एकादशी उत्सव का सर्वोच्च महत्वपूर्ण

कार्यक्रम था। श्रद्धालुओं के जन सैलाब के बीच महा जयकारों से गुंज रहे बाबा के दरबार में शीश नवाने की होड़ लगी रही। शनिवार को सबसे पहले प्रातः 5 बजे प्रभात फेरी निकाली गई और 8 बजे मंदिर में पहुंचने वाली निशान यात्राओं का स्वागत किया गया। इसके बाद दरबार में नटराज आर्ट ग्रुप द्वारा राधाकृष्ण महारास नृत्य की भाव पूर्ण प्रस्तुत किया गया। नृत्य के माध्यम से बाबा की महिमा का गुणगान का श्रद्धालुओं ने देर तक अनाद लिया। इससे पहले राम नगरिया नंदीशाला में गोदान कार्यक्रम आयोजित किया गया। दोपहर बाद मंदिर प्रांगण में एकादशी का भव्य श्री श्याम कीर्तन किया गया और प्रसाद वितरण हुआ। इस अवसर पर तेजपाल शर्मा, अश्वनी बंसल, राजेश बांसल, विकास कोचरी, नवीन गौयल, रमन सर्राफ, हर्ष महिपाल, राजेश गौयल, अनिल गाबा, दीपक गुप्ता, मनीष सोनी, हेमंत साहुवाला, राजेश सिंगला, राजकुमार सर्राफ, रुपेश सिंगला, सरस्वती देवी, यशवत देवी, जगदीश प्रसाद, विजयदा देवी, नंदनी डोलिया, हुंडी परिवार, जयदीप, मनीष जलंधरा आदि मौजूद रहे।

कुछ शब्दों तक सिमटी किशोर-युवाओं की बातचीत



कवर स्टोरी

लोकप्रिय गीतग

एक जमाना था, जब संयुक्त परिवारों में रहने वाले बच्चे किशोरावस्था में ही ऐसे मुहावरों और कहावतों दोहराने लगते थे, जो आज के किशोरों के मुंह से सुनने को मिलें तो निश्चित रूप से आश्चर्य हो- जैसे कि 'नहले पे दहला' और 'सौ सुनार की एक लुहार की'। ये कहावतें या मुहावरें अभी एक-डेढ़ दशक पहले तक किशोरों के मुंह से सुनना आश्चर्य की बात नहीं होती थी। लेकिन अगर आज की बात करें तो किशोरों के पास अंग्रेजी के कुछ गिने-चुने शब्द ही होते हैं, जिन्हें वे आपसी संवाद के दौरान अक्सर दोहराते रहते हैं। मसलन- 'ओके, रियली, यू नो, वाव और ट्रस्ट मी।' जैसे बमुश्किल एक दर्जन अंग्रेजी के शब्द हैं, जो विशेषकर आज के शहरी बच्चे अक्सर आपस में बातचीत के दौरान दोहराते रहते हैं।

मातृभाषा से बढ़ती दूरी: आज पूरे भारत में सभी क्षेत्रों की मातृभाषाओं पर यह संकट देखने को मिल रहा है। आज चाहे दक्षिण भारत हो या उत्तर, मध्य हो या पश्चिम। शहरी क्षेत्र में कहीं भी बच्चे खासकर किशोर और युवा अपनी मातृभाषा के मुहावरों, कहावतों और लोकोक्तियों के इस्तेमाल में जरा भी सहज नहीं दिखते हैं।

आजकल के किशोर और नौजवान बात-बात में 'ब्रो', 'टैट्स', 'लिट' और 'रियली यार' जैसे अंग्रेजी के शब्द तो बार-बार दोहराते हैं, लेकिन उनकी रोजमर्रा की जुबान में खांटी मातृभाषा के शब्द ढूँढ़े नहीं मिलते। वास्तव में हमारी नई पीढ़ी की वोकेबलरी किसी भाषायी विकास को नहीं बल्कि दिनों-दिन बढ़ रही सांस्कृतिक दूरी की कहानी कहती है और यह दूरी उस समय से बढ़नी शुरू हुई है, जब हम सदियों की अपनी गुलाम मानसिकता के मनोवैज्ञानिक दबाव में अपनी मातृभाषा को अंग्रेजी के सामने दरिद्र मान लेते हैं और इसी भावना के चलते अपनी रोजमर्रा की बातचीत में टूटे-फूटे अंग्रेजी के शब्द बार-बार दोहराकर अपने

को मॉडर्न दिखाने की कोशिश करते हैं।
मोबाइल की लत का असर: आजकल घरों में मां-बाप के साथ बोलनी जाने वाली मातृभाषा को किशोर और युवा आपस में बोलना ओल्ड फैशन समझते हैं। इसलिए वे हर जगह अंग्रेजी के कुछ शब्दों से काम चलाते रहते हैं। सोशल मीडिया ने विशेषकर

मोबाइल की लत लगने के बाद इस आदत को और पक्का बना दिया है। वास्तव में सोशल मीडिया का कुछ वैश्विक प्रभाव नई पीढ़ी पर इस कदर पड़ा है कि अंग्रेजी के शब्द अपनी रोजमर्रा की बातचीत में बोलना ग्लैमर लगने लगा है। जबकि हम सब जानते हैं कि ये बहुतायत में इस्तेमाल हो रहे अंग्रेजी के टूटे-फूटे शब्द अपनी अभिव्यक्ति में किसी तरह की भावना नहीं जगाते बल्कि बस स्टाइल बनकर रह गए हैं।

भावनात्मक गहराई से बढ़ी दूरी: अभी एक-डेढ़ दशक पहले तक बातचीत में इस्तेमाल होने

वाली कोई एक कहावत या कोई एक देसी मुहावरा हमारे दुखी और परेशान मन की सारी कहानी कह देता था। लेकिन आज बस 'मूड ऑफ' कह देने भर से काम चल जाता है। वास्तव में यह चेतना है कि अगर हम जल्दी चेत नहीं, तो हमारी मजबूत अभिव्यक्ति के देसी शब्द खो जाएंगे, तब हमें कहना ही नहीं, किसी के कहे हुए को समझना भी आसान नहीं होगा। आज सिर्फ कॉलेज, सोशल मीडिया में ही नहीं, दफ्तरों में भी लोगों के बीच अक्सर अंगुलियों में गिने जाने वाले कुछ शब्दों से पूरी बातचीत कर लेने की कोशिश देखी जाती है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि चाहे सोशल मीडिया हो, चाहे लोगों के बीच निजी संवाद हो या सार्वजनिक बतकही ही क्यों न हो? बस थोड़े से ही शब्द हमारे इर्द-गिर्द घूमते रहते हैं। आजकल बातचीत में जरा भी ठहराव या भावनाओं की गहराई देखने को नहीं मिलती। 'टू द प्वाइंट'

घर, ऑफिस, कॉलेज हो या कोई पार्टी जहां कहीं भी किशोर या युवा आपस में बातचीत करते हैं, तो अधिकतर अंग्रेजी के कुछ शब्दों तक ही सिमटे रहते हैं। मातृभाषा संस्कार और क्षेत्रीयता का सौधापन उसमें से नदारद रहता है। नई तकनीकी का हस्तक्षेप, विदेशी जीवनशैली और आधुनिकता के अधानुकरण जैसी कई वजहें इसके लिए जिम्मेदार हैं। इससे जुड़े तमाम पहलुओं पर एक नजर।

कहकर लोग तेजी से सतहीपन को सही ठहराने की कोशिश करते रहते हैं।

एक जमाना था, जब लोग आपस में बातचीत में रुचि लेते थे, लेकिन आज तो बस 'रिप्लाई' करते हैं। वास्तव में यह फर्क भाषा के विकास का नहीं, मातृभाषा से बढ़ी हुई दूरी का परिचायक है। आज के किशोरों और हाल में जवान हुए कितने युवाओं के मुंह से आपने 'घर की मुर्गी दाल बराबर' या 'नाच न आवे आंगन टेढ़ा' जैसे मुहावरें-लोकोक्तियां सुनी हैं? जबकि एक-डेढ़ दशक पहले युवाओं के बीच इस तरह के मुहावरें बातचीत का हिस्सा होते थे। ये शब्द या ये मुहावरें, खालिस बातचीत नहीं होते, ये हमारे बाप-दादाओं की संस्कृति को हम तक पहुंचाने का जरिया होते हैं, जो अब लगातार खत्म हो रहे हैं। आज के युवा और किशोर अगर ये शब्द, शब्दावलि, मुहावरें तथा कहावतों से दूर हैं, तो यह दूरी यहीं तक सीमित नहीं है। इनकी यह दूरी लगातार अपनी विरासत, संस्कृति और मातृभाषा से भी हो रही है। आज की पीढ़ी 'टेकन फॉर ग्रांटेड', 'कर्मा हिट्स बैक' या 'टैट्स हाउ इट वक्स' जैसे विदेशी वाक्य दोहराती है, जो कि निरा कोरे शब्द होते हैं। इनमें जरा भी भावनात्मक गहराई देखने को नहीं मिलती।



शॉर्टकट्स-इमोजी का बढ़ा ट्रेंड: वास्तव में मोबाइल और इंटरनेट ने संवाद को 'फास्ट फूड' में बदल दिया है। जल्दी लिखो, जल्दी भेजो, जल्दी भूलो, यही सब देखने को मिल रहा है। अब लोग 'थैंक यू' भी पूरा नहीं लिखते बल्कि 'टीएचएक्स' लिखकर काम चलाना चाहते हैं। 'क्या हाल है' की जगह अब नई पीढ़ी सिर्फ 'एसयूपी' लिखकर अपने को कूल समझती है। वास्तव में नई पीढ़ी अब इस कदर शॉर्टकट की भाषा बोल रही है कि वह अपनी आधी से ज्यादा अभिव्यक्तियों को इमोजियों के हवाले कर देती है और उनके विचार तो बस स्टैटस अपडेट तक सीमित होकर रह गए हैं। यही वजह है कि आज युवा पीढ़ी में भाषा का अभ्यास और शब्दों की संवेदना दोनों का ही घोर अभाव दिखता है।

हमारे युवाओं और किशोरों की यह नई शब्दावली, परिवार और लोक-संस्कृति के छीजने का भी परिणाम है। इसलिए हमें बहुत जल्दी सचेत हो जाना चाहिए और यह दोहरा लेना चाहिए कि भाषा का पतन शब्दों का पतन नहीं, विचारों का पतन होता है। इसलिए जितना जल्दी हो, हमें अपनी संस्कृति और सभ्यता को अगर जीवंत बनाए रखना है, तो अपनी मातृभाषा को समृद्ध बनाना होगा, सिर्फ पढ़ने के मामले में ही नहीं बल्कि रोजमर्रा के संवाद में भी। *



जीवन की सांझ में पैरेंट्स महसूस ना करें अकेलापन

दार्पित / डॉ. मोनिका शर्मा

हाल ही में दिल्ली के एक युवक की इमोशनल पोस्ट सोशल मीडिया पर काफी वायरल हुई। इस पोस्ट में लिखा गया था कि वह देर रात 3:30 बजे अस्पताल के बाहर अपनी कार में बैठा है और लगभग 36 घंटे से सोया नहीं है। उसके पिता को दिल का दौरा पड़ा है। वह हालात को संभालने की कोशिश कर रहा है। उसे यह भी अफसोस है कि वह नौकरी के कारण परिवार से दूर हो गया है। अपने माता-पिता के साथ समय नहीं बिता पाया। माता-पिता को वक्त नहीं दे पाया। एक बेटा होने में असफल रहा। युवक ने पिता को हार्ट अटैक आने के बाद दुखी मन से बाद खुद को 'नाकाम बेटा' बताया। असल में बीमारी से जूझते पिता को देखे लिखे गई भावुक बातों वाली यह पोस्ट कितने ही युवाओं के लिए थोड़ा ठहरकर सोचने की बात लिए है। ये शब्द अपनों के साथ वक्त बिताने की अहमियत समझाते हैं। समय रहते अपने माता-पिता को समय देने की एक मानवीय चेतना भी लीए।

फिजिकल रूप से अकेलेपन को झेलना इंसान के लिए तकलीफदेह होता है। उपद्राज लोगों के मामले में तो यह बहुत बड़ी समस्या बन गई है। अपराधबोध तले दबता मन: यह सच है कि आज के समय में करियर बनाने और जरूरतें जुटाने में लगे युवाओं की मुश्किलें भी कम नहीं हैं। आज के कट थ्रॉट कॉर्पोरेटेशन में डटे रहना कुछ भी सोचने का समय नहीं देता। अपनों को भी याद करने का वक्त नहीं मिलता। इन हालातों में मन अपराधबोध का भी शिकार बनता है। नेशनल अलायंस फॉर केयर गिविंग और एएआरपी की रिपोर्ट के मुताबिक 47 प्रतिशत लोग अपने माता-पिता की चिंता में भावनात्मक रूप से टूटने लगते हैं। बड़ों के अकेले पड़ जाने की पीड़ा को बच्चों का मन भी समझता है। लेकिन काम-काजी मजबूरियों के कारण पैरेंट्स से दूर रहने वाले लोग भी जानते हैं कि उनके माता-पिता को उनकी देखभाल की जरूरत है। ऐसे में ठहराव की राह खुद ही चुननी होगी। आपा-धापी में अपने अहसासों को बचाने के लिए युवाओं को एक संतुलन तो साधना होगा।



बढ़ने लगती हैं कई चिंताएं: बच्चों की जिंदगी संवराने के लिए अपना जीवन जीना भूल जाने वाले पैरेंट्स थके रहने और टूटते मन के इस दौर में उनका इंतजार करते रहते हैं। अकेलेपन के घेरे में आ जाते हैं। जाने कब क्या हो जाए का तनाव और सेप्टी से जुड़ी चिंताएं उन्हें हर पल परेशान करती हैं। सेहत से जुड़ी परेशानियों में बिचकली ही टूट जाते हैं। उलझाती मन:स्थिति वाली ऐसी बातों के चलते हालिया वर्षों में बुजुर्गों में सुसाइड का आंकड़ा भी बढ़ा है। मैसाचुसेट्स इंस्टीट्यूट आफ टेक्नोलॉजी के वैज्ञानिकों के मुताबिक वृद्धावस्था में अकेलापन, बुजुर्गों की समय से पहले जान जाने का अहम कारण है। एक निश्चित उम्र के बाद इमोशनल और

रहने के मोर्चे पर समय की टिक-टिक को सुनना भी जरूरी है। वक्त निकल जाने के बाद कुछ नहीं किया जा सकता। जिंदगी भर के लिए एक कसक मन में रह जाती है। देखा जाए तो यह एक रिश्ते को निभाने की बात भर नहीं। उपद्राज माता-पिता की देखभाल एक मानवीय जिम्मेदारी भी है। सो दूर बैठे केवल महंगे मोल वाली चीजें भेजकर मन को तसल्ली देने के रास्ते ना निकालें। ना भूलें, जीवन की सांझ में अपने बच्चों के इमोशनल सपोर्ट की बुजुर्ग अभिभावकों को सबसे ज्यादा जरूरत होती है। इसलिए जितना अधिक संभव हो, उनके साथ वक्त गुजारें, उनका ध्यान रखें। *

आत्मचिंतन / रहिम वैभव गर्ग

अभिव्यक्ति का सहज माध्यम है- शब्द। लेखन हो या जीवन शब्दों से ही अभिव्यक्त होता है। शब्दों की यात्रा ही, जीवन को गतिशील बनाए रखती है। शब्द न होते तो हम मौन को भी परिभाषित नहीं कर पाते। शब्दों की ध्वनि ही जीवन को गुंजायमान रखती है। शब्दों का अर्थ के साथ, लहजा भी हमारे भावों को दर्शाता है। वास्तव में अभिव्यक्ति के दो ही माध्यम हैं। एक तो शब्द, दूसरा भाव। शब्दों का संसार तो विस्तृत है ही, लेकिन शब्दों से परे भी एक दुनिया होती है, वो है मौन। मौन, वो भी व्यक्त कर देता है, जो शब्द भी व्यक्त नहीं कर पाते हैं।
अव्यक्त को करता है व्यक्त: मौन एक साधना है। इसके विविध रूप हैं। मौन कभी शब्दों का विराम है तो कभी भावों की गहन अभिव्यक्ति है। कभी मौन रोष अभिव्यक्त करता है, तो कभी आशा प्रेम की अभिव्यक्ति। मौन कभी शब्दों की विवशता भी प्रकट करता है। कभी-कभी शब्द



हमारी अनुभूति को व्यक्त ही नहीं कर पाते, उसे मौन व्यक्त कर देता है। शब्द, भावों की गूंज है तो मौन भावों की मूक अभिव्यक्ति है। किसी ने क्या खूब कहा है कि स्पीच इज सिक्वर, साइलेंस इज गोल्ड। सचमुच बोलना चांदी के समान है तो चुप रहना स्वर्ण के तुल्य। कभी ऐसा भी होता कि हम कुछ बोलना चाहते हैं, लेकिन किसी कारणवश बोल नहीं पाते हैं, फिर सोचते हैं कि न बोलना ही

अपनी बात और भावनाएं दूसरों तक पहुंचाने के लिए शब्दों की जरूरत पड़ती है। लेकिन शब्दों से भी गहन अभिव्यक्ति मौन की होती है। मौन से हमें अंतस की भी सहज अनुभूति हो जाती है।

आत्मनुभूति का द्वार मौन

श्रेयस्कर रहा।
आत्मसंयम का परिचायक: मौन, अभिव्यक्ति का श्रेष्ठतम माध्यम है। बशर्तें कोई समझने वाला हो। सामाजिक जीवन में संवादरहित अभिव्यक्ति एक गहरा प्रभाव छोड़ती है। चुप रहना भी एक विजय है। अपने शब्दों को विराम देना एक आत्मसंयम है। इस आत्मसंयम को आत्मसात करना हमारी जीत है। बाहरी मौन का संयम रखते हुए, आंतरिक मौन साधना को पाना जीवन दर्शन है। बाहरी मौन जीवन का आनंद है, आंतरिक मौन आत्मा का आनंद है। शब्दों का मौन लौकिक रंग है, आंतरिक मौन, आलौकिक रंग है, क्योंकि

चेतन का स्वभाव ही आत्मतत्व की खोज है। जिसका क्षणिक आभास हम जब-तब करते रहते हैं, लेकिन जब यह आत्मतत्व चिरस्थायी हो जाता है, तो असल आनंद प्राप्त होता है। बाहरी क्रियाएं विचलित करती हैं। आंतरिक मौन, लोक में रहकर आलौकिक सुख प्रदान करता है। स्वयं से स्वयं को ढूँढ़ना ही आंतरिक मौन है। वहीं ईश्वर से साक्षात्कार है। आत्मा में ही परमात्मा का वास होता है। आंतरिक मौन सृष्टि का अनहद नाद है, जिसे सिर्फ महसूस किया जा सकता है।

चाहता है। वास्तविकता यही है कि हम दो दुनिया में जीते हैं। बाहरी दुनिया जो कर्मशील दुनिया है, जहां हम अपना किरदार निभाने के लिए बाध्य हैं। वो हमें थोड़ी आसक्ति भी देती है। आसक्ति होना लाजिमी भी है, क्योंकि वही हमें कर्मशील बनाता है। दूसरी दुनिया है आत्मा का आनंद, जिसे हम स्वयं के भीतर अनुभव कर सकते हैं। ये हमारी अपनी खोज है, अपनी पूंजी है। इसे हम ही प्राप्त कर सकते हैं और इसे कोई हमसे छीन भी नहीं सकता। बाहरी क्रियाकलापों

संसार में रहकर संसार से विरक्ति सबसे कठिन कार्य है। आसक्तियों ही सांसारिक कार्यों को फलीभूत करवाती हैं। जीवन का द्वैत ही यही है कि यदि अध्यात्म को अपनाते हैं तो कर्तव्यों से विमुख हो जाते हैं और कर्तव्यों का निर्वाह, बिना आसक्तियों के होता ही नहीं। इसी झंझावात में जीवन-यापन हो जाता है।

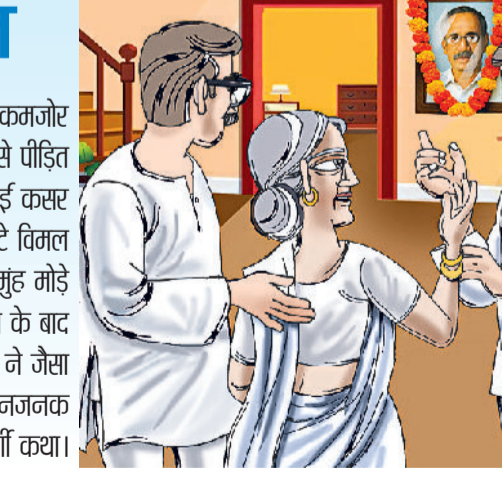
का विराम ही आंतरिक मौन है। बाहर किताना ही शोर हो यदि आंतरिक शांति है तो आप हर जगह विजयी होंगे। कहने का सार यही है कि अपने जीवन की सांसारिक यात्रा के विभिन्न पड़ावों को पूरा करते हुए भी अंतिम ध्येय अंतस का मौन ही होना चाहिए। *

छोटी कहानी / सविता गोयल

दोहे / चमंडीलाल अग्रवाल
सूनी-सी दहलीज
सूना घर का आंगना, सूनी-सी दहलीज।
भूख, गरीबी वो चुकी, घर गरीब के बीज।
जैसे को तैसा मिले, खे ल्गलावर परत।
वह भी फिर आरवस्त-सा, रम भी फिर आरवस्त।
बदल रही है जिंदगी, बदल रहा है दौर।
निःसंदिग्ध नई चुनौतियां, हर पल करिए गौर।
पांव कुल्लाई गार ली, गण संभलना भूल।
गढ़ा आया सागने, काहे गिरे किजुल।
गीता, रामायण बीज, बांधे देव, कुरान।
खे न सका इंसान तो, एक अद्रद इंसान।
भरी भीड़ में रम हुए, बहुत अक्रेले आज।
अपनेपन का बांधते, किसके सिर पर ताज।
यदि कुपाय को धन दिया, धन लैगा बेकार।
ज्यादा खाकर वस्तुएं, जैसे तब बीमार।
वाटर एटीएम लगे, सूखे सारे कूप।
परिवर्तन का मोहरा, खड़ा बदलकर रूप।
फिसला करती लथ से, पाई कोई चीज।
छोटे हैं संसार में, ऐसे कुछ नाबीज।
मले विवेकानंद लें, अथवा गौतम बुद्ध।
कर्तव्यों से ही लड़ें, अधिकारों के युद्ध।

तृप्ति

जहां आर्थिक रूप से कमजोर बड़े बेटे कमल ने कैसर से पीड़ित पिता के इलाज में कोई कसर नहीं छोड़ी, वहीं छोटे बेटे विमल ने अपनी जिम्मेदारी से मुंह मोड़े रखा। पिता के देहांत के बाद उनकी तेरहवीं में विमल ने जैसा दिखावा चाहा, वह अपमानजनक था। एक मर्मस्पर्शी कथा।

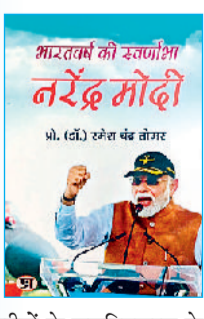


पिता की बीमारी का पता होने के बाद भी कभी उसने उनके इलाज और देखभाल में बड़े भाई का हाथ नहीं बंटया। एक बार कांता देवी ने विमल से कहा भी, 'बेटा, कमल का हाथ थोड़ा तंग रहता है, ऊपर से तेरे पिताजी की बीमारी पर बहुत पैसा खर्च हो रहा है। तुम थोड़ी मदद कर दोगे तो उसे थोड़ी राहत मिलेगी।'
इस पर विमल का जवाब था, 'मां, आपको क्या पता, मेरी कमाई से ज्यादा तो मेरा खर्च है। आप लोग तो यहां पुरतैनी मकान में रहते हैं। लेकिन मुझे तो हर महीने फ्लैट का किराया भी देना पड़ता है। आगे मेरा परिवार भी बढ़ रहा है तो खर्च भी बढ़ रहे हैं फिर इस बीमारी का क्या पता ठीक हो ना हो! बेकार में लुटने-पिटने से क्या फायदा?'

बेटे के मुंह से ऐसा सुनकर कांताजी ने कभी दोबारा उसे किसी प्रकार की मदद के लिए नहीं कहा। मनोहरजी बच तो नहीं पाए, लेकिन अपने बड़े बेटे-बहू के सेवाभाव को देखकर उनके हृदय में हमेशा उनके लिए आशीर्वाद के भाव रहते। कांता देवी पति की मृत्यु से आहत थीं, ऊपर से आज मनोहरजी की तेरहवीं पर आए विमल के मुंह से ये सब सुनकर उन्हें बहुत बुरा लग रहा था। अपने बड़े बेटे को असमंजस में देख उन्होंने समझाया, 'कमल, तुझे किसी की बातों में आकर अपनी हैसियत से बाहर कुछ करने की जरूरत नहीं है। तूने अपने पिता के जीते जी उनकी जो जी-जान से सेवा की है, वो उसी से तृप्त हो गए हैं। ये ऊपरी दिखावा और कर्मकांड उनके लिए अब कोई मायने नहीं

पुस्तक रचा / विज्ञान भूषण

देश की स्वर्णाभा नरेंद्र मोदी
आजादी के बाद देश के विकास और इसे सशक्त बनाने में भारत के सभी प्रधानमंत्रियों की भूमिका रही है। इसी क्रम में वर्तमान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अब तक के अपने कार्यकाल में कई महत्वपूर्ण और अभूतपूर्व कार्य किए हैं और इस दिशा में निरंतर प्रयासरत भी हैं। फिर वो चाहे विश्व में भारतवर्ष की प्रतिष्ठा बढ़ाने की बात हो, कश्मीर से धारा 370 हटाने का ऐतिहासिक कदम हो, कोरोना काल का मजबूती से सामना करना रहा हो, महिलाओं और गरीबों के सशक्तिकरण के लिए किए गए प्रयास हों या आतंकी गतिविधियों का मुंहतोड़ जवाब देना हो। इस पुस्तक में उनके ऐसे तमाम प्रयासों की विस्तार से चर्चा की गई है। इसमें लेखक ने नरेंद्र मोदी के व्यक्तित्व के कई पहलुओं को भी उजागर किया है। *



पुस्तक: भारतवर्ष की स्वर्णाभा नरेंद्र मोदी, **लेखक:** प्रोफेसर (डॉक्टर) रमेश चंद्र तोमर, **मूल्य:** 600 रुपये, **प्रकाशक:** प्रभात प्रकाशन, आसफ ली रोड, नई दिल्ली



इंडियन पैसिफिक एक्सप्रेस

जैसा कि नाम से ही जाहिर है, यह ट्रेन आपको दुनिया की सबसे यादगार ट्रेन यात्रा के रूप में दो महासागरों को पार करवाती है। सिडनी से पर्थ तक का 4352 किमी. लंबा यह रेल मार्ग आपको अनूठे लोक की यात्रा का अनुभव देता है। विशाल ऑस्ट्रेलिया महाद्वीप को पार करते हुए आप यहां के दिलकश नजारे देखेंगे तो मानो हिप्नोटाइज हो जाएंगे। कई जगह तो आपको वन्य जीवन की झांकी भी देखने को मिलेगी। इस ट्रेन में यात्रियों के लिए कई क्लास के कोच हैं, जैसे गोल्ड सर्विस के तहत स्लीपर केबिन। आर रेड सर्विस के तहत डे नाइट सीट। स्लीपर केबिन में आप तमाम सुविधाओं से सुसज्जित सिंगल या ट्विन स्लीपर केबिन ले सकते हैं और स्वाइट ऑस्ट्रेलियन भोजन का लुफ्त उठा सकते हैं। जबकि आर रेड सर्विस के तहत डेनाइट सीट दी जाएगी, जिस पर सोने की सुविधा भले ही न हो पर आपको आरामदायक तरीके से बैठने की सुविधा जरूर मिलती है। यहां पर्याप्त लेगस्पेस है, कोहनी टिकाने के लिए आरामदायक हथिये हैं, वीडियो देखने की सुविधा है। इन डिब्बों में भी स्नेक्स, कॉफी, लंच, डिनर सब कुछ उपलब्ध कराया जाता है। k

रोचक

शिल्कर चंद जैन

रेल यात्राएं तो आपने भी जरूर की होंगी। लेकिन देश-दुनिया में कुछ रेलगाड़ियां ऐसी हैं, जो हजारों किलोमीटर की यात्रा करती हैं। दुनिया की सबसे लंबी दूरियां तय करने वाली इन रेलगाड़ियों से यात्रा का अनुभव बेहद अनोखा और मजेदार होता है। इनमें से कुछ लंबी रेल यात्राओं पर एक नजर।

सबसे लंबी दूरी तय करने वाली अनोखी-शानदार रेल गाड़ियां

ट्रांस साइबेरियन एक्सप्रेस

दुनिया की सबसे लंबी दूरी तय करने वाली यात्री ट्रेन है, ट्रांस साइबेरियन एक्सप्रेस। मॉस्को से व्लाडीवोस्टोक तक फैली 9288 किमी. की पटरियों पर सपरत दौड़ती यह ट्रेन आपको वाकई एक यादगार यात्रा का अनुभव देती है। 77 किमी. प्रतिघंटे की रफ्तार से दौड़ने वाली इस ट्रेन में बिताए करीब 146 घंटे (करीब 6 दिन) आप शायद ही अपनी जिंदगी में कभी भुला पाएं, क्योंकि इन 6 दिनों में आप कभी पहाड़ों के बीच से गुजरेंगे, तो कभी हरी घास से भरे मैदानों से, कभी यह ट्रेन आपको रेगिस्तान के दृश्य दिखाएगी, तो कभी हरे भरे बियाबान जंगल के बीच से ले जाएगी। k



भारत की सबसे लंबी रेल यात्रा

भारत की सबसे लंबी रेल यात्रा विवेक एक्सप्रेस तय करती है। यह 9 राज्यों से होकर गुजरती है। यह असम के डिब्रूगढ़ से तमिलनाडु के प्रसिद्ध स्थल कन्याकुमारी तक चलती है। यह रेलमार्ग लगभग 4,273 किलोमीटर लंबा है। इस सफर को तय करने में लगभग 80 घंटे लगते हैं। इस ट्रेन का नाम स्वामी विवेकानंद के नाम पर रखा गया है। अपने इस सफर में यह ट्रेन लगभग 55 स्टेशनों पर रुकती है। k

द ब्लू ट्रेन

दक्षिण अफ्रीका की मशहूर ब्लू ट्रेन प्रीटोरिया से केपटाउन के बीच 1600 किमी. की यात्रा तय करती है। सच कहें, तो यह ट्रेन पटरि पर दौड़ने वाले किसी होटल की मानिंद है। इसमें कई सुट्स भी हैं, जहां होटल जैसी सुविधाएं मौजूद हैं। यात्रा बहुत लंबी नहीं है। करीब 27 घंटे की इस यात्रा के दौरान अफ्रीका के तस्वीर सरीखे कुदरती दृश्य आपका मन मोह लेंगे। इस ट्रेन की गति कोई खास नहीं, मात्र 57 किमी. प्रति घंटे है, क्योंकि इसे होटल रूम सरीखे डिब्बों की जरा नजाकत से ही चलाना पड़ता है और यात्रियों की सुख-सुविधा का खयाल भी रखना पड़ता है। k



द कनाडियन ट्रेन

टोरंटो से वैंकुवर की यात्रा करवाने वाली यह ट्रेन जर्नी आपको 83 घंटे तक सैर कराती है। इस दौरान यह ट्रेन आपको कनाडा के विभिन्न मनोहर दृश्यों से भरी 4466 किमी. दूरी का अवलोकन करवाती है। ट्रेन की गति पहाड़ों की चढ़ाई में कभी मंद पड़ जाती है, तो हरे-भरे चित्ताकर्षक जंगलों से गुजरने के दौरान तेज भी हो जाती है। इस ट्रेन में कांच से बनी बड़ी-बड़ी खिड़कियों से तरह-तरह के दृश्यों को देखना वाकई रिलैक्सिंग और पीसफुल एक्सपीरियंस देता है। k

चाइना यूरोप ब्लॉक ट्रेन

द चाइना यूरोप ब्लॉक ट्रेन, दुनिया की सबसे लंबी दूरी तय करने वाली ट्रेन है। यह यीबू से मैड्रिड तक की 9977 किमी. की यात्रा करीब 21 दिनों में तय करती है। लेकिन यह कोई यात्री ट्रेन नहीं बल्कि मालगाड़ी है। k



झिंगू हाइ स्पीड रेल

आज की तारीख में अगर लंबी दूरी तय करने वाली सबसे तीव्र गति वाली यात्री रेलगाड़ी का जिक्र होता है, तो उनमें झिंगू हाइ स्पीड रेल सबसे ऊपर है। यह ट्रेन बीजिंग से शंघाई की 1303 किमी. की यात्रा मात्र 5 घंटे में तय कर लेती है। इसकी गति 300 किमी. प्रतिघंटे तक हो सकती है। k



शर्ट-जैकेट्स, शर्ट और जैकेट का कॉम्बो होता है। इन दोनों की खूबियां मिलकर शर्ट-जैकेट्स बनाती हैं। इस सीजन में इनका ट्रेंड यंगस्टर्स में काफी बढ़ रहा है।

इन हल्की सर्दियों में युवाओं को भा रहें शर्ट-जैकेट्स

फैशन ट्रेंड

प्रतिभा अरोड़ा

शर्ट-जैकेट्स या जिसे फैशन की भाषा में शैकेट्स भी कहा जाता है, इस साल की हल्की सर्दियों में युवाओं की पहली पसंद बनी हुई है। ना सिर्फ स्टाइल के कारण बल्कि इनके आरामदायक, वर्सटिलिटी और मॉडर्न लुक की वजह से भी ऐसा हुआ है। क्या होती है शर्ट-जैकेट? शर्ट-जैकेट्स, दिखती तो शर्ट जैसी हैं, लेकिन इनका फेब्रिक मोटा होता है और ये हल्की सर्दियों में गार्मेंट देकर जैकेट का भी काम करती हैं। इसलिए इन्हें शर्ट-जैकेट्स कहा जाता है। इन्हें पहनने के लिए जरूरी नहीं है कि मौसम बहुत ठंडा ही हो। अगर हल्की हवा चल रही हो तो भी इन्हें आराम से पहना जा सकता है।



इनकी खासियतें: शर्ट-जैकेट्स ट्विल, डेनिम, वूलेन फ्लैनेल, कॉटन ब्लेंड या कॉर्डरॉय से बनती हैं। इनकी डिजाइन बेहद आकर्षक होती है, जिनमें आगे बटन, दो या चार पॉकेट और किसी भी खड़ी तो कई में गिरी कॉलर होती हैं यानी दिखने में ये बिल्कुल शर्ट जैसी लगती हैं, लेकिन शर्ट के मुकाबले थोड़ी मोटी होती हैं। हालांकि इनका वजन कड़ाके की सर्दियों में पहनी जाने वाली जैकेट्स के मुकाबले काफी कम होता है। फिर भी ये शर्ट के मुकाबले वजनदार होती हैं। ट्रांजिशन वेडर यानी जब न तो ज्यादा सर्दी होती है और न ज्यादा गर्मी, कहने का मतलब पूरी तरह से बारिश के बाद की गर्माहट का मौसम गया नहीं होता और पूरी तरह से सर्दियां आई नहीं होतीं, इस दौरान इन्हें पहनना सबसे सही लगता है। क्योंकि ऐसे मौसम में जब हल्की ठंड पड़ रही हो, ये बिल्कुल परफेक्ट च्वाइस होती हैं। इन्हें अंदर टी-शर्ट के रूप में भी पहना जा सकता है। कई बार खुले या बंद दोनों तरीकों से इन शर्ट-जैकेट्स को केरी किया जा सकता है। युवाओं को क्यों हैं इतनी पसंद: शर्ट-जैकेट्स युवाओं को बेहद पसंद आती हैं। वास्तव में इन दिनों कपड़ों में लेयर्सिंग ट्रेंड में है यानी, कई परतों में ड्रेस पहनकर अलग-अलग लुक बनाना। शर्ट-जैकेट्स इस लेयर्सिंग फिगोमिना की स्टार आइटम है। इसे आराम और स्टाइल के साझे कॉम्बिनेशन के रूप में भी देखा और जाना जाता है। यह न तो पूरी तरह से फॉर्मल है और न ही पूरी तरह से कैजुअल बल्कि इसके

लिए जो शब्द ज्यादा प्रचलित है, वह है-स्मार्ट कैजुअल। इसलिए ये युवाओं को विशेष रूप से पसंद आती हैं, क्योंकि उनकी बांडी में ये एक परफेक्ट बैलेंस बनाती हैं। लेकिन इसकी पॉपुलैरिटी की वजह सिर्फ यही नहीं है, इसे पॉपुलर बनाने में सोशल मीडिया का भी बड़ा हाथ है। वास्तव में इंस्टाग्राम, पिंटेस्ट और यूट्यूब पर फैशन इंफ्लुएंसर लगातार इन्हें प्रमोट कर रहे हैं, जिससे युवाओं में इनकी डिमांड काफी बढ़ गई है। सबसे बड़ी बात यह है कि ये शर्ट-जैकेट्स, युवक ही नहीं युवतियों के बीच भी खूब लोकप्रिय हैं, क्योंकि इन्हें दोनों ही बड़े आराम से पहन सकते हैं। ये दोनों की बांडी पर खूब फव्वती हैं। शर्ट-जैकेट्स पहनने का एक फायदा यह भी है कि इसके कारण बहुत कम कपड़ों पर भी एक कंप्लीट आउटफिट तैयार हो जाता है। बस एक बेसिक टी-शर्ट, डेनिम और ये शर्ट-जैकेट्स, बस समझिए पूरा आउटफिट तैयार हो गया।

इस साल है इसका ट्रेंड: इन दिनों यह फैशन या ट्रेंडिंग स्टाइल में इसलिए है, क्योंकि इस साल पुरुषों द्वारा डेनिम और फ्लैनेल चेक शर्ट-जैकेट्स को खासतौर पर पसंद किया जा रहा है। अपने नए लुक, स्मार्ट डिजाइन और कलर कॉम्बिनेशन के कारण ये यंगस्टर्स की पहली पसंद बनी हुई है तो लड़कियों में भी कुछ खास कलर्स की शर्ट-जैकेट्स इस साल खूब फैशन में हैं, जिनमें परपल, टॉन कलर सबसे खास है। साथ ही लड़कियों में इनका ओवरसाइज्ड डिजाइन भी खूब हिट है। चूंकि यह एक यूनिसेक्स फैशन है, इसलिए शर्ट-जैकेट्स को खूब सारे न्यूट्रल कलर्स में भी देखा जाता है जैसे- बेज, ऑलिव, ब्लैक पिंक और ग्रे। कुल मिलाकर शर्ट-जैकेट्स इन दिनों युवाओं के बीच इसलिए भी खूब फैशन में हैं, क्योंकि ये सिर्फ एक ड्रेस भर नहीं हैं बल्कि लाइफस्टाइल का सिंबल बन गए हैं। कम लेयर्सिंग, ज्यादा स्टाइल और हर मौके पर फिट रहने वाली शर्ट-जैकेट्स आज यंगस्टर्स के बीच पहली पसंद बनी हुई हैं। जहां तक इसके स्टाइल कॉम्बिनेशन की बात है तो शर्ट-जैकेट्स में स्टाइलिश लुक के लिए इसे बेसिक टी-शर्ट या टर्टलनेक के ऊपर पहनते हैं। साथ ही लोअर में डेनिम, चिनी या स्कर्ट पर भी यह बहुत आसानी से मैच कर जाती है। स्कार्फ या कैप के साथ भी इसे कैरी करना अटपटा नहीं बल्कि आकर्षक लगता है। जहां तक फुटवियर्स की बात है तो स्नीकर्स या लोफर इसके साथ अच्छे लगते हैं। k

जिस दौर में कई सुपर स्टार्स बॉलीवुड में एक्टिव थे, उस समय में भी संजीव कुमार ने अपने एक्टिंग टैलेंट से अलग पहचान बनाई। संजीव कुमार की पुण्य तिथि 6 नवंबर पर उनके द्वारा निभाए कुछ यादगार किरदारों पर एक नजर।

हर रोल निभाने में परफेक्ट वर्सटाइल एक्टर संजीव कुमार

यादें

मनोज प्रकाश

सुपर स्टार का ग्लैमर, हिट कराने का तमगा और स्लिम-टिम फिगर अगर किसी हीरो की इमेज को एक डेकोरम देता है, तो किसी भी भूमिका को परफेक्ट तरीके से करना भी किसी फिल्म को हिट कराने की गारंटी हो सकती है। यह बात सिद्ध की थी संजीव कुमार ने। वह एक ऐसे कलाकार थे, जिनके बारे में कहा जाता था कि वे कोई रोल निभाते नहीं, उसे पूरी तरह जीते थे। जिस तरह हिंदी फिल्म इंडस्ट्रीज में दिलीप कुमार, अमिताभ



'आंधी' में सुवित्रा सेन के साथ संजीव कुमार

बचन, धर्मेन्द्र, राजेश खन्ना, देवानंद, राजकपूर को बेहतरीन अभिनेता माना जाता है, उसी श्रेणी में संजीव कुमार का नाम भी बड़े सम्मान से लिया जाता है। हर तरह की भूमिकाएं निभाई: 9 जुलाई 1938 को गुजरात प्रांत में जन्मे, संजीव कुमार ने जितनी भी फिल्मों की सभों में उनके डाइलॉग से अधिक उनकी आंखें और मुस्कराहट ने अभिनय किया। संजीव कुमार हिंदी फिल्मों के ऐसे अभिनेता थे, जिन्होंने हर तरह की भूमिकाएं कीं। यहां तक कि उन्होंने एक ही फिल्म में एक साथ नौ भूमिकाएं निभाकर एक ऐसा कमाल किया, जो 'भूतो न भविष्यति' है। उनके किरदार ऐसे हुआ करते थे, जिन्हें भुला पाना संभव ही नहीं है। 'शोले' और 'आंधी' उनकी दो ऐसी फिल्में हैं, जो भारतीय सिनेमा में मील का पत्थर माना जाता है। 'शोले' में ठाकुर का यादगार किरदार: 'शोले' में संजीव कुमार ने पहले जेलर और फिर ठाकुर बलदेव सिंह का रोल बखूबी निभाया। पूरे परिवार को डकैत गब्बर सिंह द्वारा खत्म कर दिए जाने और उनके दोनों हाथ काट दिए जाने के बाद भी ठाकुर बलदेव सिंह ने जिस तरह से अपना

प्रतिशोध लिया, उसने आने वाली फिल्मों के लिए एक मानक बना दिया। हर किरदार में अलग रंग: फिल्म 'आंधी' में संजीव कुमार के द्वारा निभाए गए होटल मैनेजर जेके का रोल आज भी दर्शक याद करते हैं। उस फिल्म में उन्होंने एक बेबस पति लॉकन समर्पित प्रेमी के रोल में अभिनय की पराकाष्ठा को छुआ था। जहां तक उनके अभिनय में मौजूद वर्सटिलिटी की बात है तो 'खिलौना' में बिजय, 'अनामिका' में देवेंद्र, 'सच्चाई' में किशोर, 'बचपन' में काशीराम, 'नमकीन' में गेरुलाल, 'राजा और रंक' में विजय और सुधीर, 'कोशिश' में हरिचरण, 'अंगूर' में अशोक और 'वक्त की दीवार' में विक्रम के किरदार ऐसे हैं, जिनसे उनकी प्रतिभा का लोहा सभों ने माना। 'उलझन' में उन्होंने सुलक्षणा पंडित के साथ एक इमानदार अफसर और पति के रूप में फंसे व्यक्ति के द्रढ़ को बेहतरीन तरीके से निभाया। फिल्म 'नया दिन नई रात' में नौ किरदार निभाना और सभी को उसकी धारा में बहाते ले जाना, संजीव कुमार के बस की ही बात थी। उनसे पहले और उनके बाद आज तक किसी ने नौ रोल नहीं निभाए हैं। ये भी रहे यादगार किरदार: संजीव कुमार को फिल्म 'दस्तक' के लिए हार्मिद का गंभीर किरदार निभाने हेतु राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान किया गया था। इसके उलट 'पति, पत्नी और वो' में तो उन्होंने हंसा-हंसाकर लोगों को लोटपोट कर दिया था। पत्नी की बीमारी की आड़ में सेकेट्री से प्रेम राग आलापना और पत्नी को समझाना, उस दौर में एक ऐसी कहावत बन गया था कि लोग रियल लाइफ में ऐसे किसी मामले में आपस में एक-दूसरे को कह देते थे-संजीव कुमार बन रहे हो? संजीव कुमार के द्वारा निभाए गए यादगार किरदारों में 'मौसम' के डॉक्टर अमरनाथ को कैसे भूला जा सकता है? इस फिल्म में उनका डबल रोल, शर्मिला टैगोर के रोल से किसी तरह से कमतर नहीं रहा। इसी तरह फिल्म 'त्रिशूल' तो अमिताभ की कही जाती है, लेकिन इसमें संजीव कुमार ने एक ऐसे व्यापारी का रोल प्ले किया, जो अंजाने में ही अपने बेटे से व्यापारिक संघर्ष कर रहा होता है और उसे पता ही नहीं चलता। इसमें पिता-पुत्र के संवाद, दो प्रतिद्वंद्वी व्यापारियों को उस लड़ाई का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिसमें वे अपनी जीत के लिए किसी भी स्तर तक जा सकते हैं। उन पर फिल्माए गाने भी हुए हिट: संजीव कुमार पर फिल्माए गाने भी सुपरहिट रहे। 'अनोखी रात' का गीत 'ओह रे ताल मिले नदी के जल में, नदी मिले सागर में', 'खिलौना' का 'खिलौना जानकर तुम तो', 'सीता और गीता' का 'हवा के साथ-साथ, 'मेरी भीगी भीगी सी पलकों पे', 'आंधी' का 'तुम आ गए हो, नूर आ गया है', 'मौसम' का 'दिल ढूँढता है फिर वहीं फुसंत के रात-दिन' और 'सिलसिला' का 'रंग बरसे', हर दौर के हिट गानों की श्रेणी में गिने जाते हैं। अधूरी रही प्रेम की दास्तान: संजीव कुमार ने जिस तरह से फिल्मों में अपना परचम लहराया, उसी तरह से उनके प्रेम के चर्चे भी खूब सुने जाते रहे। हेमा मालिनी के साथ के किस्से तो सर्वाधिक चर्चित रहे ही हैं। सुलक्षणा पंडित के साथ भी उनकी जोड़ी चर्चित रही पर वह भी अपने मुकाम पर पहुंचने से रह गईं। खुद के बारे में भी कई अपनो ही भविष्यवाणी को सच साबित करते हुए जीवन के पचास बसंत पूर्ण करने से पहले ही 6 नवंबर 1985 को अनंत आकाश में हमेशा-हमेशा के लिए विलीन हो गए। k



दूसरे को कह देते थे-संजीव कुमार बन रहे हो? संजीव कुमार के द्वारा निभाए गए यादगार किरदारों में 'मौसम' के डॉक्टर अमरनाथ को कैसे भूला जा सकता है? इस फिल्म में उनका डबल रोल, शर्मिला टैगोर के रोल से किसी तरह से कमतर नहीं रहा। इसी तरह फिल्म 'त्रिशूल' तो अमिताभ की कही जाती है, लेकिन इसमें संजीव कुमार ने एक ऐसे व्यापारी का रोल प्ले किया, जो अंजाने में ही अपने बेटे से व्यापारिक संघर्ष कर रहा होता है और उसे पता ही नहीं चलता। इसमें पिता-पुत्र के संवाद, दो प्रतिद्वंद्वी व्यापारियों को उस लड़ाई का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिसमें वे अपनी जीत के लिए किसी भी स्तर तक जा सकते हैं। उन पर फिल्माए गाने भी हुए हिट: संजीव कुमार पर फिल्माए गाने भी सुपरहिट रहे। 'अनोखी रात' का गीत 'ओह रे ताल मिले नदी के जल में, नदी मिले सागर में', 'खिलौना' का 'खिलौना जानकर तुम तो', 'सीता और गीता' का 'हवा के साथ-साथ, 'मेरी भीगी भीगी सी पलकों पे', 'आंधी' का 'तुम आ गए हो, नूर आ गया है', 'मौसम' का 'दिल ढूँढता है फिर वहीं फुसंत के रात-दिन' और 'सिलसिला' का 'रंग बरसे', हर दौर के हिट गानों की श्रेणी में गिने जाते हैं। अधूरी रही प्रेम की दास्तान: संजीव कुमार ने जिस तरह से फिल्मों में अपना परचम लहराया, उसी तरह से उनके प्रेम के चर्चे भी खूब सुने जाते रहे। हेमा मालिनी के साथ के किस्से तो सर्वाधिक चर्चित रहे ही हैं। सुलक्षणा पंडित के साथ भी उनकी जोड़ी चर्चित रही पर वह भी अपने मुकाम पर पहुंचने से रह गईं। खुद के बारे में भी कई अपनो ही भविष्यवाणी को सच साबित करते हुए जीवन के पचास बसंत पूर्ण करने से पहले ही 6 नवंबर 1985 को अनंत आकाश में हमेशा-हमेशा के लिए विलीन हो गए। k



'त्रिशूल' में अमिताभ के पिता के किरदार में संजीव कुमार